छप रही है !

शीघ्र प्रकाशित होगी ! !

ज्यौतिष रत्नमाला-भाषाटीका

लेखक—

आचार्य पं० श्रीसीतारामझा

प्राप्ति स्थान—

मास्टर संस्कृत प्रकाशन भवन

सी० के० १५।५२ सुड़िया, वाराणसी-१

॥ श्रीः ॥

जन्मपत्रव्यवस्था

भाषाटीकासहिता

रचयिता—

पं० श्रीबद्रीनारायणत्रिपाठी

ज्यौ० आ०

★

प्रकाशक :—

मास्टर संस्कृत प्रकाशन भवनम्

सी० के० १५।५२ सुड़िया

वाराणसी-१

❀ श्रीः ❀

जन्मपत्रव्यवस्था

वाराणसीमण्डलान्तर्गत-'बरहनी'-निवासी-काशीस्थ-'लालाराम-सुखदाससंस्कृतविद्यालय'प्रधानाध्यापक-ज्यौतिषाचार्य-

श्री पं० बद्रीनारायणत्रिपाठिकृतया

सोदाहरण-सरलहिन्दीभाषाटीकया

सहिता ।

प्रकाशकः—

मास्टर संस्कृत प्रकाशन भवनम्

सी.के. १५।५२ सुड़िया, वाराणसी-१

प्रकाशिका —

श्रीमती विमला देवी

प्रोप्राइटर, मास्टर संस्कृत प्रकाशन भवन,

सी. के. १५।५२ सुड़िया, वाराणसी–१

प्रकाशन तिथि :

वामन द्वादशी, संवत् २०२४

१५ सितम्बर १९६७ ई०

मूल्यम् १ : २४

मुद्रक:—

श्री प्रेस,

कार्तवीर्यपुर (कतुवापुरा)

वाराणसी–१

भूमिका

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि विवादस्तेषु केवलम् ।
प्रत्यक्षं ज्यौतिषं शास्त्रं चन्द्राऽर्कौ यत्र साक्षिणौ ॥

ललाटपट्टे लिखिता विधात्रा षष्ठीदिने याऽक्षरमालिका च ।
तां जन्मपत्रीं प्रकटीकरोति दीपो यथा वस्तु घनान्धकारे ॥

बड़े हर्ष की बात है कि हमारी लिखी हुई इस जन्मपत्रव्यवस्था नामक पुस्तक का प्रस्तुत संस्करण इतने अल्प समय में हो रहा है। जन्मकुण्डली-सम्बन्धी सभी बातों को जानने के लिये यह पुस्तक कैसी है इसका अनुमान इसके संस्करण मात्र से ही हो सकता है। विगत संस्करण में जो बातें छूट गई थीं उनका भी इसमें समावेश कर दिया गया है। जन-साधारण की शिक्षा का ध्यान रखते हुये इस पुस्तिका को सरलतम बनाने का पूर्ण प्रयास किया गया है। यदि इस लघु पुस्तिका से छात्रों का कुछ भी उपकार हुआ तो मैं अपने परिश्रम को सफल समझूंगा।

विशेष—यदि इसमें प्रमादवश दृष्टिदोष वा मुद्रण के दोष से कुछ भी त्रुटियाँ या अशुद्धियाँ रह गई हों, वे जिन महानुभावों के दृष्टिगोचर हों, वे कृपया मुझे सूचित करें तो मैं अग्रिम आवृत्ति में उसे पूर्ति कर उनका चिर कृतज्ञ बनूंगा। इत्यलम्।

स्खलनं गच्छतः क्वाऽपि भवत्येव प्रमादतः ।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः ॥ इति शम् ॥

विद्वज्जनाऽनुचरः—

बद्रीनारायण त्रिपाठी,

बरहनी, वाराणसी ।

॥ श्रीः ॥

अथ जन्मपत्रव्यवस्था

[भाषाटीकासहिता]

— अथ मङ्गलाचरणम् —

गजास्यं बुद्धिदातारं भक्तानामभयङ्करम् ।
सर्वसिद्धिप्रदं देवं वन्देऽहं कामदं प्रभुम् ॥ १ ॥
शरदिन्दुनिभां कान्तिमात्मज्योतिप्रकाशिनीम् ।
अभयां वरदां नित्यां प्रणमामि सरस्वतीम् ॥ २ ॥
आचार्य्यं **रामधारीं** सकलगुणनिधिं ज्योतिषे सुप्रवीणम्
ख्यातं वै मालवीये बुधजनसदसि प्राप्तकीर्तिं वरिष्ठम् ।
शिष्योऽहं तं प्रणम्य तदभिमतमनो मच्छरण्यं प्रसन्नम्
कुर्वे तां सारभूतां शिशुजनसुखदां **जन्मपत्रव्यवस्थाम्** ॥ ३ ॥

[इष्टकाल बनाने की रीति]

१—सूर्योदय से १२ बजे दिन के भीतर का जन्म हो तो जन्म समय और सूर्योदयकाल का अन्तर कर, शेष को ढाई गुना करने से इष्टकाल होता है।

जैसे—कल्पना किया कि सं० १९९७ मार्गशीर्षशुक्ल पौर्णिमा शनिवार को दिन में १० बजकर ४५ मिनट पर किसी का जन्म हुआ तथा पञ्चाङ्ग में सूर्योदय ६ बजकर ४७ मिनट पर है। इसलिए नियम १ के अनुसार अन्तर करने से ३ घ० ५८ मि० हुआ, फिर ढाई गुना करने से ९।५५ यह घटयात्मक इष्टकाल हुआ।

२—यदि १२ बजे दिन से सूर्यास्त के अन्दर का जन्म हो तो जन्म समय तथा सूर्यास्तकाल का अन्तर कर, शेष को ढाई गुना कर दिनमान में घटाने से इष्टकाल होता है।

उदाहरण—मार्गशीर्षशुक्ल १५ शनिवार को ही यदि २ बजकर २५ मिनट पर जन्म है तो सूर्यास्त ५ बजकर १३ मिनटमें जन्म समय घटाया शेष घं० २ मि० ४८ का ढाई गुना किया तो ७ दण्ड ० पल हुआ। इसको दिनमान २६ दण्ड ६ पल में से घटाया तो १९ दण्ड ६ पल यह नियम दो के अनुसार इष्टकाल हुआ।

३—यदि सूर्यास्त से १२ बजे रात्रिके अन्दर का जन्म हो तो जन्म समय तथा सूर्यास्तकाल का अन्तर कर,शेष को ढाई गुना कर,दिनमान में जोड़ने से इष्टकाल होता है।

जैसे—पूर्व उदाहरण के ही दिन रात्रि में ११ बजकर ४७ मिनट पर किसी का जन्म है, इसमें से सूर्यास्त समय ५ बजकर १३ मिनट घटाने से ६ घण्टा ३४ मिनट हुआ। ढाई गुना करने से १६।२५ हुआ। दिनमान २६ दण्ड ६ पल में जोड़ा तो ४२ दण्ड ३१ पल इष्टकाल हुआ।

४—यदि १२ बजे रात्रि के बाद सूर्योदय के अन्दर का जन्म हो तो जन्म समय तथा सूर्योदय समय का अन्तर कर, शेष को ढाईगुना कर, ६० दण्ड में घटाने से, इष्टकाल होता है।

उदाहरण—कल्पना किया कि पूर्वोदाहरणस्थित पौर्णिमा शनिवार को ही रात्रि में ४ बजकर १५ मिनट पर जन्म हुआ तो नियम ४ के अनुसार सूर्योदय ६ घण्टा ४७ मिनट में से ४ घण्टा १५ मिनट घटाने से २ घण्टा १२ मिनट यह शेष हुआ। इसको ढाईगुना करने से ६ दण्ड २० पल हुआ। इसको ६० दण्ड में घटाने से ५३ दण्ड ४० पल यह इष्टकाल हुआ।

[अथ छायातो इष्टकालज्ञानम्]

पूर्णाऽपूर्णदिनान्तरेण गुणितं स्याद् वासरार्धं गतः।
सद्योऽह्नं परमे दिने विरहितं मध्याह्नपादा भवेत्॥
तत्पादान् स्वपदे विशोध्य वरहीनाहान्तरेणान्वितम्।
छेदा भाजितराशिलब्धमतुलं नाड्यो विनाड्यः क्रमात्॥१॥

यथा

$$\frac{(\text{परम दिन}-\text{परमक्षयदिन})+\text{दिनार्ध}}{\text{पा-छा-(परमदिन-इष्टदिन)}+\text{(परमदिन-परमक्षयदिन)}}=\text{इष्टघट्यः}$$

$$\frac{(\text{प० दि० ३२।४०}-\text{प० क्ष० दि० २७।३०})+\frac{\text{इष्टदिन}}{\text{२}}}{\text{इ०दि०पा०छा०}-(\text{३२।४०-इष्टदिन})+(\text{३२।४०-२७।३०})}=\text{इष्टघटी}$$

[अथ यातर्क्ष-सर्वर्क्षयोर्ज्ञानम्]

गतर्क्षनाडी खरसेषु शुद्धा सूर्योदयादिष्टघटीषु युक्ता ।
भयातसंज्ञा भवतीह तस्य निजर्क्षनाडीसहितो भभोगः ॥१॥

हि० टी०—गत नक्षत्र घटी पल को ६० घटी में घटाकर शेष में सूर्योदयादिष्टघटी पल जोड़ने से भयात होता है और उस पूर्वोक्त गत शेष में जन्मनक्षत्र के घटी पल को जोडने से भभोग होता है ।

उदाहरण—नियम के अनुसार इष्टकाल ६।५५ गत नक्षत्र कृत्तिका ११।५ उसको ६०में घटाने से शेष ४८।५५ बचा, इसमें सूर्योदयादिष्ट ६।५५ जोड़ने से ५८।५० यह भयात हुआ और ४८।५५में ही रोहिणी का मान १५।२६ जोड़ने से ६४।२१ यह भभोग हुआ ।

विशेष—भभोग में चार का भाग देने से लब्ध घटी पल तुल्य एक चरण का मान होगा । जैसे--६४।२१ में ४ का भाग देने से १६।५।१५ यह एक चरण का मान हुआ । यहाँ भयात ५८।५० है इसलिये रोहिणी के चतुर्थ चरण में जन्म हुआ ॥ १ ॥

[धनर्णचालनयोर्ज्ञानम्]

पंक्तिः स्वेष्टाद्धवेदग्रे पङ्क्त्यामिष्टं विशोधयेत् ।
तच्चालनमृणं ज्ञेयं व्यत्यस्ताद् व्यत्ययं तथा ॥२॥

हिन्दी टीका—यदि अपने इष्टसमय से पंक्ति आगे हो तो पंक्ति में इष्टकाल घटाने से शेष तुल्य ऋण चालन होता है और यदि पंक्ति से

इष्टकाल ही आगे हो तो इसका उलटा अर्थात् इष्टकाल में से ही पंक्ति घटाने से शेष तुल्य धन चालनं होता है ॥ २ ॥

उदाहरण—इष्टकाल सं० १९९७ मार्गशीर्ष शुक्ल १५ शनिवार को ९।५५ है और पंक्ति पौष कृष्ण ६ शुक्रवार की ४४।२६ है। इसलिए शुक्रवार की दिनादि पंक्ति ६।४४।२६ इसमें दिनादि इष्टकाल ७।९।५५ घटाने से शेष दिनादिक ६।३४।३१ यह ऋण चालन हुआ और इसी इष्टकाल में से पंक्ति मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्दशी शुक्रवार की दिनादि ६।४४।५० घटाने से शेष दिनादि ०।२५।५ यह धन चालन हुआ।।२॥

[ग्रहस्पष्टीकरणम्]

गतैष्यदिवसाद्येन गतिर्निघ्नी खषड्हृता ।
लब्धमंशादिकं शोध्यं योज्यं स्पष्टो भवेद्ग्रहः ॥३॥

हिन्दी टीका—जिस ग्रह को स्पष्ट करना हो उसकी तात्कालिकी गति से ऋण अथवा धन चालन को गोमूत्रिका रीति से गुणने से जो अंशादि हो उसको धन वा ऋण चालन के अनुसार पञ्चाङ्ग स्थित ग्रह में जोड़ने वा घटाने से स्पष्ट ग्रह होता है ॥ ३ ॥

विशेषः—जो ग्रह वक्री हो तथा राहु और केतु के लिए सर्वदा धन और ऋण चालन में क्रम से आगत अंशादि को पञ्चाङ्ग स्थित राश्यादि में घटाने और जोड़ने से स्पष्ट ग्रह होता है ॥ ३ ॥

उदाहरण—पूर्वागत ऋणचालनम् ६।३४।३१, रविगतिः ६१।२४ पञ्चाङ्गस्थितसूर्य राश्यादि ८।५।३४।५२

गोमूत्रिका रीति से गुणन करने पर—

अंशादि ६।४३।४३।१९।२४ यह हुआ। इसको पंक्ति कालिक स्पष्ट सूर्य राश्यादि ८।५।३४।५२ में ऋण चालन होने के कारण घटाने से शेष ७।२८।५१।८।४०।३६ यह राश्यादि इष्टकालीन स्पष्ट सूर्य हुआ। इसी तरह भौमादि ग्रहों का भी स्पष्टीकरण करना। चन्द्रमा के लिए विशेष प्रकार से करना।

[चन्द्रस्पष्टीकरणम्]

खषट्घ्नं भयातं भभोगोद्धृतं तत्खतर्कघ्नधिष्ण्येषुयुक्तं द्विनिघ्नम्
नवाप्तं शशीभागपूर्वस्तु भुक्तिः खखाभ्राष्टवेदा भभोगेन भक्ता ॥

हिन्दी टीका—भयात और भभोग को एक जातीय करके भयात में ६० से गुणाकर भभोग से भाग देने से जो लब्धि आवे उसमें ६० से गुणा किये हुये अश्विनी आदि गत नक्षत्रों को जोड़ दे, फिर उसमें २ से गुणा करे, गुणनफलमें ९ का भाग दे, जो लब्ध हो उसीको अंश समझें। शेष को फिर ६० से गुणा करे और नव का भाग दे जो लब्ध हो उसे कला जाने। शेष को फिर ६० से गुणा करके ९ से भाग दे जो लब्ध हो उसे विकला समझें। उपरोक्त अंशों में ३० का भाग देकर राशि बनाले। अब गति साधन का प्रकार बताते हुये कहते हैं। ४८०००को ६० से गुणा करे और उसमें भभोग का भाग दे। जो लब्ध हो उसे ही चन्द्रमा की कलात्मिका गति समझें।

उदाहरण—जैसे, जन्म के समय रोहिणी का भयात है ५८।५० तथा भभोग है ६४।२१ यहाँ पहले भयात और भभोग दोनों को ६० से गुणा करके पलात्मक बनाया तो पलात्मक भयात हुआ ३५३० तथा भभोग ३८६१। यहाँ पलात्मक भयात में ६० से गुणा किया तो २११८०० आया। इसमें पलात्मक भभोग ३८६१ से भाग दिया तो लब्ध हुआ ५४।५१।२२। अश्विनी आदि गत नक्षत्र पर्यन्त की संख्याको ६० से गुणा तो १८० हुआ। इसको पूर्व लब्ध ५४।५१।२२ में जोड़ दिया तो २३४ हुए। अब २३४।५१।२२ को २ से गुणा दिया तो ४६९।४२।४४ हुये। इनमें ९ का भाग दिया तो लब्ध अंशादिक हुए ५२।११।२४। अंश ५२ में ३० से भाग दिया तो राश्यादि स्पष्ट चन्द्रमा हुआ १।२२।११।२४।

गतिसाधन का उदाहरण—४८००० को ६० से गुणा किया तो २८८०००० हुए। इसमें भभोग से भाग दिया तो ७४५।५५ कलादि चन्द्रमा की गति तथा विगति हुई।

[अथ पलभाचरखण्डानि चाह]

मेषादिगे सायनभागसूर्ये दिनार्धभा या पलभा भवेत्सा ।
त्रिष्ठा हता स्युर्दशभिर्भुजङ्गैर्दिग्भिश्चराधांनि गुणोद्धृतान्त्या ॥

हि० टी०—जिस दिन सायन सूर्य मेषादि में जाते हैं उस दिन की मध्याह्नकालिकी छाया पलभा कहलाती है। उसको तीन स्थान में रखकर पहले स्थान में १० से, दूसरे स्थान में ८ से और तीसरे स्थान में १० से गुणा करना। केवल तीसरे स्थान के गुणनफल में ३ का भाग देने से तीन चरखण्ड होते हैं।

उदाहरण—काशी में पलभा अंगुलादि ५।४५ इसको अलग-अलग १०।८।१० से गुणा करने से तथा तीसरे स्थान वाले में ३ से भाग देने से स्वल्पान्तर से पलात्मक चरखण्ड ५७।४६।१९ हुए।

[चरखण्डवशेन लंकोदयमानतः स्वदेशोदयमानज्ञानम्]

लङ्कोदया विघटिका गजभानि गोऽङ्को,
दस्राग्निपक्षदहनाः क्रमगोत्क्रमस्थाः ।
हीनान्विताश्चरदलैः क्रमगोत्क्रमस्थै-
र्मेषादितो घटत उत्क्रमतस्त्विमे स्युः ॥

हिन्दी टी०—२७८, २९९, ३२३ पल ये क्रम से मेषादि तीन राशियों के तथा ये ही उत्क्रम से कर्कादि तीन राशियों के लङ्कोदय होते हैं। तथा मेषादि तीन राशियों के उदय में क्रम से पूर्वोक्त चरपलों के घटाने से और कर्कादि तीन राशियों के उदय में उत्क्रम से चरपल जोड़ने से स्वदेशोदय होते हैं। मेषादि ६ राशियों के उदय उत्क्रम से तुलादि ६ राशियों के उदय होते हैं।

उदाहरण—काशी की पलभा ५।४५ चरखण्ड ५७।४६।१९

अतः	लङ्कोदय		चरखण्ड		काश्युदय
मे.	२७८	—	५७	=	२२१ मी.

वृ.	२९९	−	४६	=	३५३	कुं.
मि.	३२३	−	१९	=	३०४	म.
क.	३२३	+	१९	=	३४२	ध.
सिं.	२९९	+	४६	=	३४५	वृ.
क.	२७८	+	५७	=	३३५	तु.

[यथा चोक्तं काश्युदयमानम्]

कुदस्रदस्रा गुणबाणदस्रा वेदाभ्ररामा यमवेदरामाः ।
शराब्धिरामाः शररामरामाः मेषादितो उत्क्रमतस्तुलाद्याः ॥

एवं स्वदेशीय पलभा पर से चरखण्ड का ज्ञान करके पूर्वोक्त रीति से स्वदेशीय स्वोदयमान बनाना चाहिये।

[अथ लग्नोपयुक्तायनांशानयनमाह]

[1]भूलोचनाब्धि[2]रहितः स्वदिगंश (१०) हीनः ।
षष्ट्युद्धृता फलमिताऽयनभागका स्युः ॥

हिन्दी टी०—वर्तमान शाके में ४२१ घटाना, जो शेष हो उसमें उसी का दशमांश घटाकर ६० से भाग देने से अयनांश अंशादि होता है।

उदाहरण—यथा वर्तमान शाका १८६२—

इसमें से ४२१ घटाने से शेष १४४१, इसमें इसी का दशमांश १४४।६ घटाने से शेष १२९६।५४ इसमें ६० का भाग देने से २१।३६।५४ यह अयनांश हुआ।

[अथ लग्नानयनम्]

तत्कालार्कः सायनः स्वोदयघ्ना, भोग्यांशा खत्र्युद्धृता भोग्यकालः ।
एवं यातांशैर्भवेद्यातकालो, भोग्यः शोध्योऽभीष्टनाडीपलेभ्यः ॥
तदनु जहीहि गृहादयांश्च शेषं, गगनगुणघ्नमशुद्धहृल्लवाद्यम् ।
सहितमजादिगृहैरशुद्धपूर्वैर्भवति विलग्नमदोऽयनांशहीनम् ॥

हिन्दी टी०—तात्कालिक स्पष्टसूर्य में अयनांश जोड़कर उसके भोग्यांश को सायन सूर्य जिस राशि में हो उस राशि के उदय पल से गुणाकर ३० से भाग लेने से भोग्यकाल होता है। इसी प्रकार भुक्तांश पर से भुक्त पल होता है। अर्थात् भुक्तांश को स्वोदय से गुणाकर ३० का भाग लेने से लब्धि भुक्त पल होती है। भोग्य पल को इष्टघटी के पल में घटाकर शेष में सायन सूर्य से आगे की राशियें को उदय पलें को जहाँ तक घटे घटावे, जिस राशि के उदय पल इष्ट घटी के पल में घट जायें वह शुद्ध और जिसके उदय पल नहीं घटे वह अशुद्ध राशि समझना। शेष को ३० से गुणाकर अशुद्ध राशि के उदय पल से भाग लेकर लब्धि अंशादि में अशुद्ध के पूर्व की मेषादि राशि-संख्या जोड़कर उसमें अयनांश घटाने से प्रथम लग्न होता है।

उदाहरण—इष्ट घटी ९।५५ स्पष्ट सूर्य स्वल्पान्तर से ७।८।५१।६ में अयनांश २१।३६।५४ जोड़ने से सायन रवि ८।२०।२८।३ धन के भुक्तांशादि २०।२८।३ इसको ३० अंश में घटाने से भोग्यांश ९।३१।५७ इसको धन के स्वदेशोदय ३४२ से गुणा करने से ३२६०।६।५४ इसमें ३० से भाग देने से लब्धि भोग्य काल पल १०८।४०।११ इसको इष्ट घटी ९।५५ के पल ५९५ में घटाने से शेष ४८६।१९।४९ इसमें (सायन सूर्य धन में है अतः उससे) आगे मकर का स्वोदय ३०४ घटाने से १८२। १९।४९ इसमें आगे कुम्भ का उदय नहीं घटता इसलिए (मकर शुद्ध और कुम्भ अशुद्ध संज्ञक हुआ) शेष १८२।१९।४९ को ३० से गुणा करने से ५४६९।५४।३० इसमें अशुद्ध कुम्भोदय २५३ से भाग देने से लब्ध अंशादि २१।३७।१२ इसमें मेष से मकर तक शुद्ध राशि संख्या १० राशि स्थान में जोड़ने से १०।२१।३७।१२ इसमें अयनांश २१।३६। ५४ घटाने से प्रथम लग्नराश्यादि १०।०।०।१८ हुआ॥

[अथ भोग्यपलतोऽभीष्टपलेऽल्पे लग्नसाधनं लग्नादिष्टकालसाधनञ्चाह]

भोग्यतोऽल्पेष्टकालात् खरामाहतात्।
स्वोदयाप्तांशयुग्भास्करः स्यात्तनुः॥

अर्कभोग्यस्तनोर्भुक्तकालान्वितो
युक्तमध्योदयोऽभीष्टकालो भवेत् ॥

हि० टी—सूर्य के भोग्यकाल से इष्टकाल अल्प हो तो इष्ट घटी पल को ३० से गुणाकर स्वोदय से भाग देने से लब्ध अंशादि को सूर्य में जोड़ने से लग्न होता है तथा सूर्य के भोग्य पल में लग्न के भुक्त पल जोड़कर उसमें सूर्य और लग्नके मध्यस्थ राशियों के उदय पल जोड़ने से इष्टकाल पलात्मक होता है ।

उदाहरण—यदि इष्टकाल ०।४० पल सूर्य १।५।४३।१५ अयनांश १८।१० सायन सूर्य १।२३।५३।१५ इसके भोग्यांश ६।६।४५ * इसको वृष के उदय २५३ से गुणा कर ३० से भाग देने से भोग्यकाल ०।५१ पल इष्टकाल ०।४० में नहीं घट सकता है । भोग्य से इष्टकाल अल्प है, इसलिये इष्टकाल पल ४० को ३० से गुणा किया तो १२०० हुआ, इसको (सायन रवि वृष में है अतः) वृषके उदय से भाग लेने से अंशादि ४।४४।३५ को सूर्य १।५।४३।१५ में जोड़ने से १।१०।२७।५० लग्न हुआ । लग्न से इष्टकाल का उदाहरण—लग्न ३।६।२।३७ में अयनांश जोड़ने से ३।२४।१२।३७ इसके भुक्तांश २४।१२।३७ को (सायन लग्न कर्क में है अतः) कर्क के उदय ३४२ से गुणा करने से ८२७९।५४।५४ इसमें ३० के भाग लेने से लग्न के भुक्त पल २७६ तथा सायन सूर्य १।२४।२।४० इसके भोग्यांश ५।४७।२० इसको वृष के उदय २५३ से गुणा कर १५०६।४५।२० इसमें ३० का भाग देने से भोग्यकाल पल ५० इसमें लग्न के भुक्तपल २७६ जोड़ने से ३२६ हुए इसमें लग्न और सूर्य के मध्यवर्ती मिथुन का उदय ३०४ जोड़ने से ६३० पल इष्टकाल हुआ । पल में ६० का भाग देकर घटचादि १०।३० इष्टकाल हुआ । इस इष्टकाल पर से यदि लग्न बनाया जाय तो वही ३।६।२।२७ स्पष्ट लग्न होगा ।

---

* यहाँ पर इष्टकाल से भोग्यांश अधिक है ।

[अथ रविलग्नमेकराशौ तदेष्टसाधनरीतिमाह]

यदि तनुदिननाथावेकराशौ तदंशान्तरहत
उदयः स्यात् खाग्निहृत् त्विष्टकालः ।
इनत उदय ऊनश्चेत् स शोध्यो द्युरात्रा-
न्निशि तु सरसभार्कात् स्यात्तनूरिष्टकाले ॥

हि० टी०—यदि लग्न और सूर्य दोनों एक ही राशि में हों तो रविलग्नान्तरांश को उसी राशि के स्वोदय से गुणा कर ३० से भाग देने से इष्टकाल होता है ।

विशेष यह है—यदि लग्न के अंश सूर्य से अल्प हों तो उक्त विधि से आये हुए इष्टकाल को ६० में घटाने से इष्टकाल होता है। अब लग्नानयन में विशेष कहते हैं, यदि रात्रिगत इष्टकाल (इष्टकाल में दिनमान घटाकर शेष) हो तो सायन सूर्य में ६ राशि जोड़कर लग्न साधन करने में लाघव होता है ।

क्रम से उदाहरण—सायन सूर्य १।२३।५३।१५ तथा सायन लग्न १।२८।३७।५० दोनों एक ही राशिमें हैं अतः दोनों के अन्तरांश ४।४४।३५ को वृष के उदय २५३ से गुणा किया तो १२००।०।३५ हुआ । इसमें ३० का भाग दिया तो इष्टकाल ४० पल हुआ ।

तथा सायन सूर्य १।२४।४६।७ और सायन लग्न १।१७।४७।११ हैं तो यहाँ सूर्य से लग्न अल्प है अतः उक्त रीति से दोनों के अन्तरांश ७।१।५६ को वृषके उदय २५३ से गुणा कर ३० से भाग देने से ०।५६ पल रात्रि शेष रूप इष्टकाल हुआ । इसको ६० घटीमें घटाने से ५६।१ घट्यादि सूर्योदय से इष्टकाल हुआ ।

रात्रिगत घटी से लग्नानयन का उदाहरण—दिनमान ३३।१६ सूर्योदय से इष्टघटी ३७।५२ तथा सायन सूर्य १।२६।५३।५५ यहाँ दिनमान से अधिक इष्टघटी है । इसलिये इष्टघटी ३७।५२ में दिनमान ३३।१६ घटानेसे रात्रिगत इष्टघटी ४।३६ सायन सूर्य में ६राशि जोड़कर ७।२६।५३।५५ इसका भोग्यांश ३।६।५ इसको वृश्चिक के उदय ३४५

गुणाकर ३० से भाग देने से भोग्यपल ३५ इसको रात्रि गतेष्ट घटी
।३६ के पल २७६ में घटाने से शेष २४१ इसमें आगे धन का उदय
४२ नहीं घटता है अतः शेष २४१ को ३० से गुणा किया तो ७२३०
ए इसमें अशुद्ध धन के उदय ३४२ से भाग लेने से लब्धि अंशादि
१।८।२५ हुई। इसमें शुद्ध राशि वृश्चिक तक की संख्या ८ राशि
थान में जोड़ने से सायन लग्न ८।२१।८।२५ हुआ। इसमें अयनांश
८।१०।० घटाने से ८।२।५८।२५ लग्न हुआ।

[अथ प्रकारान्तरेण लग्नानयनम्]

यत्सूर्यराश्यंशसमानकोष्ठे घट्यादिकं स्वेष्टघटीयुतं तत्।
तत्तुल्यघट्यादि भवेद्धि यत्र तत्तिर्यगूर्ध्वाङ्कमितं हि लग्नम् ॥

हि० टी०—पञ्चांग में जो लग्नसारिणी लिखी रहती है—उसमें
दि सायन सूर्य और निरयण सारिणी रहे तो निरयण सूर्य के राशि
ौर अंशके सामने जो अङ्क घट्यादि हों उसमें इष्टघटी पलको जोड़ना,
दि घटी स्थान में ६० से अधिक हो तो अधिक को छोड़कर शेष तुल्य
ङ्क उस सारिणी में जहाँ हो उस राशि अंश को लग्न समझना चाहिये।
रन्तु यह प्रकार स्थूल है।

[अथ दशमलग्नज्ञानार्थं तदुपकरणभूतं नतमाह —]

पूर्वं नतं स्याद्दिनरात्रिखण्डं दिवानिशोरिष्टघटीविहीनम्।
दिवानिशोऽरिष्टघटीषु शुद्धं द्युरात्रिखण्डं त्वपरं नतं स्यात् ॥

हि० टी०—दिनार्द्ध में यदि दिन का इष्टकाल घटे तो शेष तुल्य
दिन का पूर्व नत होता है। और यदि दिन के इष्टकाल में से ही दिन
का आधा घट जाय तो शेष तुल्य दिन का परनत होता है। एवं रात्रि
के आधे में से रात्रि का इष्टकाल घट जाय तो शेष तुल्य रात्रि का पूर्व
नत और रात्रि के इष्टकाल में से ही रात्रि का आधा घट जाय तो शेष
तुल्य रात्रि का परनत होता है।

उदाहरण—कल्पना किया कि इष्टकाल ९।५५ है और दिनमान
२६।६ है इसलिये दिनार्द्ध=१३ और ३ अब दिनार्द्ध १३।३ में से

९।५५ इष्टकाल घटाने से ३।८ दिन का पूर्वनत हुआ। इसी प्रकार रात्रि के पूर्वापरनत का ज्ञान करना चाहिये।

[दशमसाधनम्]

एवं लङ्कोदयैर्भुक्तं भोग्यं शोध्यं पलीकृतात्।
पूर्वपश्चान्नतादन्यत्प्राग्वत्तद्दशमं भवेत्॥

हि० टी०—एवं पूर्वलग्नानयनरीति से यदि पूर्वनत हो तो सूर्य का भुक्तांश साधन करना और यदि परनत हो तो सूर्य का भोग्यांश साधन करना और पूर्व अथवा परनत जो भी हो उसको इष्टकाल मानकर उसके पलादि में से यदि पूर्वनत हो तो भुक्तांश और परनत हो ता भोग्यांश घटाना फिर क्रम से ऋण अथवा धन लग्न की तरह से क्रिया करने से दशम लग्न होता है।

उदाहरण—पूर्वनत=३।८ सायन सूर्य ८।२०।२८।३ यहाँ पर पूर्वनत होने से सायन रवि का भुक्तांश=२०।२८।३ इसको धन के लङ्कोदयमान से गुणा करने से ६६।११।१०।९ हुआ। इसमें ३० का भाग देने से २२०।२२। भुक्त हुआ। आगे नियमानुसार नत घटी-पल में से घटाना चाहिये किन्तु नत पल से अधिक होने के कारण नहीं घट रहा है, यथा—(नतपल १८८—भुक्तपल २२०।२२) अतः "भुक्त भोग्यं स्वेष्टकालान्न शुद्धेदि" त्यादि रीति से इष्ट नतपल १८८ को ३०से गुणा कर दिया तो ५६४० हुआ। इसमें धन का उदय मान ३२३ से भाग देने पर लब्ध १७।२९।३२ अंशादि हुआ। इसको स्पष्ट सूर्य ७।२८। ५१। ९ में घटाने से शेष ७।११।२१।३७ राश्यादि दशम लग्न हुई।

[स-संधिद्वादशभावानयनम्]

सषड्भे लग्नखे जाया तुर्यौ लग्नोनतुर्यतः।
षष्ठोंऽशयुक्तनुः संधिरग्रे षष्ठांशयोजनात्॥
त्रयः स-सन्धयो भावाः षष्ठांशोनैकयुक् सुखात्।
अग्रे त्रयः षडेवं ते भार्द्धयुक्ताः परेऽपि षट्॥

हि० टी०—लग्न और दशम दोनों में ६।६ राशि जोड़ने से सप्तम व चतुर्थ भाव हो जाता है । चतुर्थ में से लग्न को घटाकर शेष में ६ का भाग देने से लब्ध अंशादि "षष्ठांश" होता है। इसको लग्न में जोड़ने से लग्न की सन्धि होती है। सन्धि में पुनः इसको जोड़ने से द्वितीय भाव होगा। इसी क्रम से सन्धि सहित चतुर्थभाव पर्यन्त तीनों भावों का साधन होगा। इसके बाद षष्ठांश को १ में से घटाकर शेष को चतुर्थ भाव में जोड़ने से चतुर्थ की सन्धि होगी, पुनः इसी तरह जोड़ते जाने से सप्तम भाव पर्यन्त स-सन्धि तीन भाव और बन जायंगे। इस तरह से लग्नादि स-सन्धि ६ भाव हो जायँगे। इसमें ६,६ राशि जोड़ने से द्वादश भाव पर्यन्त सन्धि सहित ६ भाव और बन जाते हैं। इस तरह सन्धि सहित द्वादश भाव स्पष्ट होते हैं।

उदाहरण—लग्न १०।०।०।१८ में ६ राशि जोड़ने से ४।०।०।१८ सप्तम भाव हुआ और दशम ७।११।२१।३७ में ६ राशि जोडने से १।११।२१।३७ चतुर्थ भाव हुआ। इसमें से लग्न को घटाने से ३।११। २१।१९ बचा। इसमें ६ का भाग देने से अंशादि ०।१६।५३।३३।१० षष्ठांश हुआ। लग्न में इसको जोड़ने से १०।१६।५३।५१।१० लग्न की सन्धि हुई। पुनः षष्ठांश को इसमें जोड़नेसे ११।३।४७।२४।२० द्वितीय भाव हुआ। द्वितीय भाव में षष्ठांश जोड़ने से ११।२०।४०।५७।३० इसकी सन्धि हुई। इसमें फिर षष्ठांश जोड़नेसे ०।७।३४।३०।४० तृतीय भाव हुआ। इसमें फिर षष्ठांश जोड़ने से ०।२४।२८।३।५० तृतीय की सन्धि हुई। एवं चतुर्थभाव १।११।२१।३७ हुआ। फिर षष्ठांश को १ में से घटा दिया शेष ०।१३।६।२६।५० को चतुर्थ भाव में जोड़ देने से १।२४।२८।३।५० चतुर्थभाव की सन्धि हुई। फिर इसमें उसी शेष को जोड़ने से २।७।३४।३०।४० पञ्चम भाव हुआ। इसी तरह पञ्चम की सन्धि २।२०।४०।५७।३० हुई। इसमें उसी शेष को जोड़ने से ३।३। ४७।२४।२० छठा भाव हुआ। एवं छठे भाव की सन्धि ३।१६।५३। ५१।१० हुई।

इस तरह से सन्धि सहित छः भाव स्पष्ट हो गये। इन्हीं भाव व

सन्धियों में ६, ६ राशियाँ जोड़ने से सप्तमादि द्वादश भाव पर्यन्त सन्धि सहित ६ और भाव बन जायँगे। इस तरह स-सन्धि सहित १२ भाव स्पष्ट हुए।

[अथ भावस्थितग्रहफलानि]

१ अथ रविफलम्—

सवितरि तनुसंस्थे शैशवे व्याधियुक्तो नयनगदसुदुःखी नीचसेवानुरक्तः।
न भवति गृहमेधी दैवयुक्तो मनुष्यो भ्रमति विकलमूर्तिः पुत्रपौत्रैर्विहीनः॥
धनगतदिननाथे पुत्रदारैर्विहीनः कृशतनुरतिदीनो रक्तनेत्रः कुकेशः।
भवति च धनयुक्तो लोहताम्रेण सत्यं न भवति गृहमेधी मानवो दुःखभागी॥
सहजभवनसंस्थे भास्करे भ्रातृनाशः प्रियजनहितकारी पुत्रदाराभियुक्तः।
भवति च धनयुक्तो धैर्ययुक्तः सहिष्णुर्विपुलधनविहारी नागरीप्रीतिकारी॥
विविधजनविहारी बन्धुसंस्थो दिनेशो भवति च मृदुवेत्ता गीतवाद्यानुरक्तः।
समरशिरसि युद्धे नास्ति भङ्गः कदाचित्प्रचुरधनकलत्रीपार्थिवानां प्रियश्च॥
तनयगतदिनेशे शैशवे दुःखभागी न भवति धनभागी यौवने व्याधियुक्तः।
जनयति सुतमेकं चाऽन्यगेहश्वशूरश्चपलमतिविलासी क्रूरकर्मा कुचेताः॥
अरिगृहगतभानौ योगशीलो मतिस्थो निजजनहितकारी ज्ञातिवर्गप्रमोदी।
कृशतनुगृहमेधी चारुमूर्तिर्विलासी भवति च रिपुजेता कर्मपूज्यो दृढाङ्गः॥
युवतिभवनसंस्थे भास्करे स्त्री-विलासी न भवति सुखभागी चञ्चलःपापशीलः।
उदरसमशरीरो नातिदीर्घो न ह्रस्वः कपिलनयनरूपः पिङ्गकेशः कुमूर्तिः॥
निधनगतदिनेशे चञ्चलस्त्यागशीलः किल बुधगणसेवी सर्वदा रोगयुक्तः।
वितथबहुलभाषी भाग्यहीनो विशीलोरतिविहितकुचैलो नीचसेवी प्रवासी॥
ग्रहगतदिननाथे सत्यवादी सुकेशी कुलजनहितकारी देवविप्रानुरक्तः।
प्रथमवयसि रोगी यौवने स्थैर्ययुक्तो बहुतरधनयुक्तो दीर्घजीवी सुमूर्तिः॥
दशमभवनसंस्थे तीव्रभानौ मनुष्यो गुणगणसुखभागी दानशीलोऽभिमानी।
मृदुलघुशुचियुक्तो नृत्यगीतानुरागी नरपतिरतिपूज्यः शेषकाले च रोगी॥
बहुतरधनभागी चायसंस्थे दिनेशे नरपतिगृहसेवी भोगहीनो गुणज्ञः।
कृशतनुधनयुक्तः कामिनीचित्तहारी भवति चपलमूर्तिर्जातिवर्गप्रमोदी॥
जडमतिरतिकामी चाऽन्ययोषिद्विलासी विहगगणविघातीदुष्टचेताः कुमूर्तिः।

नरपतिधनयुक्तो द्वादशस्थे दिनेशे कथकजनविरोधी जङ्घरोगी कृशाङ्गः ॥

[इति रविफलम्]

२ अथ चन्द्रफलम्—

तनुगतकुमुदेशे वित्तपूर्णः सुखी स्याद्बहुतरधनभोगी वीर्ययुक्तः सुदेही।
भवति च यदि नीचश्चन्द्रमाः पापगो वा जडमतिरतिदीनःस्यात्तदा वित्तहीनः॥
धनगतहरिणांके त्यागशीलो मतिज्ञो निधिरिव धनपूर्णश्चञ्चलात्मा सुदुष्टः।
जनयति बहुसौख्यं कीर्तिशाली सहिष्णुर्मुखकमलविशाली चन्द्रतुल्यस्वरूपः॥
शशिनि सहजसंस्थे पापगेहे च नित्यं न भवति बहुभाषी भ्रातृहर्ताऽरिमूर्तिः।
भवति च सुखभोगी सौख्यगे रात्रिनाथे सकलधननिधानं शास्त्रकाव्यप्रमोदी॥
बहुतरवसुपूर्णो रात्रिनाथे चतुर्थेप्रियजनहितकारी योषितां प्रीतिकारी।
सततमिह स रोगी मांसमत्स्यादि-भोगी गजतुरगसमेतः क्रीडते हर्म्यपृष्ठे ॥
तनयगतशशाङ्को वित्तपूर्णः सुखी स्याद्बहुतरसुतयुक्तो वश्यनारीसमेतः।
यदि भवति शशाङ्कः क्षीणकायोऽरिगेहे युवतिसुखसमूहः पुत्रपौत्रैर्विहीनः ॥
रिपुगृहगशशाङ्कःक्षीणतानाशकारी न भवति बहुभोगी व्याधिदुःखस्य दाता।
यदि गृहमयतुङ्गः पूर्णदेहः शशाङ्को बहुतरसुखदाता स्यात्तदा मानवानाम् ॥
विमलवपुषि चन्द्रे सप्तमस्थे मनुष्यो रुचिरयुवतिनाथः काञ्चनाढ्यः सुदेही।
शशिनि कृशशरीरे पापगे पापदृष्टेन भवति सुखभागी रोगिपत्नीपतिः स्यात्॥
निधनभवनसंस्थे शीतरश्मौ नराणां निधनमचिरकाले पापगेहे ददाति।
निजभृगुगुरुगेही सौम्यगेही च पूर्णो जनयति बहुदुःखं श्वासकासादिरोगैः ॥
नवमभवनसंस्थे शीतरश्मौ प्रपूर्णे बहुतरसुखभुक्त्या कामिनीप्रीतिकारी।
न भवति धनभागी क्षीणगे नीचगे वा विमलपथविरोधी निर्गुणो मूढचेताः॥
बहुतरधनभागी कर्मसंस्थे हिमांशौ विविधधननिधानं पुत्रदारादिपूर्णः।
रिपुकुटिलगृहस्थे कासरोगी कृशाङ्गः पितृयुवतिधनाढ्यः कर्महीनो मनुष्यः॥
बहुतरधनभोगी चायसंस्थे शशाङ्के प्रचुरसुखसमेतो दारभृत्यादियुक्तः।
शशिनि कृशशरीरे नीचपापारिगेहे न भवति सुखभागी व्याधितो मूढचेताः॥
व्ययनिलयनिवेशे रात्रिनाथे कृशाङ्गः सततहिमसरोगी क्रोधनो निर्धनश्च।
निजबुधगुरुगेहे दान्तिकस्त्यागशीलः कृशतनुसुखभोगी नीचसंगी सदैव ॥

[इति चन्द्रफलम्]

३ अथ भौमफलम्—

उदरदशनरोगी शैशवे लग्नभौमे पिशुनमतिकृशाङ्गः पापवित् कृष्णरूपः ।
भवति चपलचित्तो नीचसेवी कुचैली सकलसुखविहीनः सर्वदा पापशीलः ॥
धनगतपृथिवीजे धातुवादी प्रवासी ऋणधनकृतचित्तो द्यूतकर्त्ता सहिष्णुः ।
कृषिकरणसमर्थो विक्रमे लग्नचित्तः कृशतनुसुखभागी मानवः सर्वदैव ॥
सहजभवनसंस्थे भूमिजे भ्रातृहर्ता कृशतनुसुखभागी तुङ्गभौमो विलासी ।
धनसुखनरहीनो नीचशत्रूच्चगेहे वसति सकलपूर्णो मन्दिरे कुत्सिते च ॥
जडमतिरतिदीनो बन्धुसंस्थे च भौमे न भवति कुलमार्ये बन्धुदीनो न दुःखी।
भ्रमति सकलदेशे नीचसेवानुरक्तः परवशपरदारे लुब्धचित्तः सदैव ॥
तनयभवनसंस्थे भूमिपुत्रे मनुष्यो भवति तनयहीनः पापशीलोऽतिदुःखी ।
यदि निजगृहतुङ्गे वर्तते भूमिपुत्रः कृशमलयुतगात्रं पुत्रमेकं ददाति ॥
रिपुगृहगतभौमे संगरे मृत्युभागी सुतधनपरिपूर्णस्तुङ्गगे सौख्यभागी ।
रिपुगृहगणपरिदृष्टे नीचगे क्षोणिपुत्रे भवति विकलमूर्तिः कुत्सितः क्रूरकर्मा॥
मुनिगृहगतभौमे नीचसंस्थेऽरिगेहे युवतिमरणदुःखं जायते मानवानाम् ।
मकरगृहनिजस्थे नाऽन्यपत्नीश्च धत्ते चपलमतिविशालां दुष्टचित्तां विरूपाम्
प्रलयभवनसंस्थे मंगले क्षीणनीचे व्रजति निधनभावं नीरमध्ये मनुष्यः ।
धनकिरणचराऽर्कः सर्वदा चैव भोगी परपदगसुनीलो मृत्युलोकं प्रयाति ॥
नवमभवनसंस्थे क्षोणिपुत्रेऽतिरोगी नयनकरशरीरः पिङ्गलः सर्वदैव ।
बहुजनपरिपूर्णो भाग्यहीनः कुचैलो विकलजनसुवेषा शीलविद्यानुरक्तः ॥
दशमगतमहीजे दान्तिकः कोशहीनो निजकुलजयकारी कामिनीचित्तहारी
जठरसमशरीरो भूमिजीवोपकोपी द्विजगुरुजनभक्तो नाऽतिनीचो न ह्रस्वः॥
सुरजनहितकारी चायसंस्थे च भौमे नृप इव गृहमेधी पीडितः कोपपूर्णः ।
भवति च यदि तुङ्गे लोकसौभाग्ययुक्तो धनकिरणनियुक्तः पुण्यकामार्थलोभी
परधनहरणेच्छुः सर्वदा चञ्चलाक्षश्चपलमतिविहारी हास्ययुक्तः प्रचण्डः ।
भवति च सुखभागी द्वादशस्थेच भौमे परयुवतिविलासी साक्षिकः कर्मपूरः॥

[इति मङ्गलफलम्]

——

४ अथ बुधफलम्—

नुगतशशिपुत्रे कान्तिमांश्चातिहृष्टो विमलमतिविशालः पंडितस्त्यागशीलः
मतमृदुशुचिभागी सत्यवादी विलासी बहुतरसुखभोगी सर्वकालप्रवासी ॥
भवति च पितृभक्तः सुस्थितः पापभीरु मृदुतनुखररोमा दीर्घकेशोऽतिगौरः।
धनगतशशिसूनौ सत्यवादी विहारी बहुतरवसुभागी सर्वकालप्रवासी ॥
साहसी निजजनैः परियुक्तश्चित्तशुद्धिरहितो हतसौख्यः ।
मानवः कुशलतेप्सितकर्ता शीतभानुतनयेऽनुजसंस्थे ॥
बहुतरधनपूर्णो भ्रातृहर्ता च पापे बहुतरबहुपत्नी पूर्णगेहे स्वतुङ्गे ।
तरलमतिरलज्जः क्षीणजंघः कृशाङ्गः शिशुवयसि च रोगी बंधुसंस्थे कुमारे
तनय - मन्दिरगे शशिनन्दने सुतकलत्रयुतः सुखभाजनम् ।
विकचपङ्कजचारुमुखः सुखी सुरगुरुद्विजभक्तियुतः शुचिः ॥
अरिनिकेतनवर्तिशशाङ्कजो रिपुकुलाद्भयदो यदि वक्रगः ।
यदि च पुण्यगृहे शुभवीक्षिते रिपुकुलं विनिहन्ति शुभप्रदः ॥
तुरगभावगते हरिणाङ्कजे भवति चञ्चलमध्यनिरीक्षितः ।
विपुलवंशभवप्रमदापतिः स च भवेच्छुभगे शशिवंशजे ॥
निधनवेश्मनि सत्ययुतः शुभो निधनदोऽतिथिमण्डन एव च ।
यदि च पापयुते रिपुगेहगे मदनकाम्यजवेन पतत्यधः ॥
नवमसौम्यगृहे शशिनन्दने धनकलत्रसुतेन समन्वितः ।
भवति पापयुते विपथस्थितः श्रुतिविमन्दकरः शशिजोद्यमी ॥
गुरुजनेन हिते निरतो जनो बहुधनो दशमे शशिनन्दने ।
निजभुजार्जितवित्ततुरङ्गमो बहुधनैर्नियतो मितभाषणः ॥
श्रुतमतिर्निजवंशहितः कृशो बहुधनप्रमदाजनवल्लभः ।
रुचिरनीलवपुः शुभलोचनो भवति चायगते शशिजे नरः ॥
भवति च व्ययगे शशिनन्दने विकलमूर्तिधरो धनवर्जितः ।
परकलत्रधने धनचित्तवान् व्यसनदूररतः कृतकः सदा ॥

[इति बुधफलम्]

५ अथ गुरुफलम् —

विविधवस्त्रविपूर्णकलेवरः कनकरत्नधनः प्रियदर्शनः ।
नृपतिवंशजनस्य च वल्लभो भवति देवगुरौ तनुगे नरः ॥
सुरगुरौ धनमन्दिरसंश्रिते प्रमुदितो रुचिरः प्रमदापतिः ।
भवति मानधनो बहुमौक्तिकैर्गतवसुर्भविता प्रसवाह्निके ॥
सहजमन्दिरगे च बृहस्पतौ भवति बन्धुगतार्थसमन्वितः ।
कृपणतामपि गच्छति कुत्सिते धनयुतोऽपि सदा धनहानिवान् ॥
सन्माननानाधनवाहनाद्यैः सञ्जातहर्षः पुरुषः सदैव ।
नृपानुकम्पा समुपात्तसम्पद्दम्भोलिभृन्मन्त्रिणि भूतलस्थे ॥
सुहृदता च सुहृज्जनवन्दितः सुरगरौ सुतगेहगते नरः ।
विपुलशास्त्रमतिः सुखभाजनो भवति सर्वजनप्रियदर्शनः ॥
करिहयैश्च कृशाङ्गतनुर्भवेज्जयति शत्रुकुलं रिपुगे गुरुः ।
रिपुगृहे यदि वक्रगते गुरौ रिपुकुलाद्भयमातनुते विभुः ॥
युवतिमन्दिरगे सुरयाजके नयति भूपतितुल्यसुखं जनः ।
अमृतराशिसमानवचाः सुधीर्भवति चारुवपुः प्रियदर्शनः ॥
विमलतीर्थकरे च बृहस्पतौ निधनता न मनःस्थिरता यदा ।
धनकलत्रविहीनकृशः सदा भवति योगपथे निरतः परम् ॥
सुरगुरौ नवमे मनुजोत्तमो भवति भूपतितुल्यधनी शुचिः ।
कृपणबुद्धिरतः कृपणः सुखी बहुधनप्रमदाजनवल्लभः ॥
दशममन्दिरगे च बृहस्पतौ तुरगरत्नविभूषितमन्दिरः ।
भवति नीतिगुणैर्बुधसंयुतः परधराङ्गणवर्जितधार्मिकः ॥
व्रजति भूमिपतेः समतां धनैर्निजकुलस्य विकारकरः सदा ।
सकलधर्मरतोऽर्थसमन्वितो भवति चायगते सुरयाजके ॥
शिशुदशा भवने हृदि रोगवानुचितदानपराङ्मुख एव च ।
कुलधनेन सदा कुलदाम्भिको भवति पापगृहे च बृहस्पतौ ॥

[इति गुरुफलम्]

६ अथ शुक्रफलम्—

उरसिगे तनुगे भृगुनन्दने भवति कार्य्यरतः परपण्डितः ।
विमलशल्यगृही सदने रतो भवति कौतुकहा विधिचेष्टितः ॥
परधनेन धनी धनगे भृगौ भवति योषिति वित्तपरो नरः ।
रजतसीसधनी गुणशैशवः कृशतनुः सुवचा बहुबालकः ॥
सहजमन्दिरवर्तिनि भार्गवे प्रचुरमोहयुतो भगिनीसुतेः ।
भवति लोचनरोगसमन्वितो धनयुतः प्रियवाक् च सदम्बरः ॥
भवति बन्धुगते भृगुजे नरो बहुकलत्रसुतेन समावृतः ।
सुरमते सुखमध्यवरे गृहे वसनपानविलाससमावृतः ॥
तनयमन्दिरगे भृगुनन्दने बहुसुतो दुहितुर्वरपूजितः ।
बहुधनो गुणवान् वरनायको भवति चापि विलासवतीप्रियः ॥
भवति वै कुशलोद्भवपण्डितो रिपुगृहे भृगुजेऽस्तगते नरः ।
जयति वैरिबलं निजतुङ्गजे भृगुसुते सुखदे किल षष्ठगे ॥
युवतिमन्दिरगे वसते नरो बहुसुतेन धनेन समन्वितः ।
विमलवंशभवः प्रमदापतिर्भवति चारुवपुर्मुदितः सुखी ॥
निधनसद्मगते भृगुजे जनो विमलधर्मरतो नृपसेवकः ।
भवति मांसप्रियः पृथुलोचनो निधनमेति चतुर्थवयेऽपि वा ॥
विमलतीर्थपरीक्षतनुः सुखी सुरवरद्विजवर्णरतः शुचिः ।
निजभुजार्जितभाग्यमहोत्सवो भवति धर्मगते भृगुजे नरः ॥
दशममन्दिरगे भृगुवंशजे बधिरबन्धुयुतः स च भोगवान् ।
वनगतोऽपि च राज्यफलं लभेत् समरसुन्दरवेषसमन्वितः ॥
निजभावगते भृगुनन्दने वरगुणावहितोऽप्यनलव्रतः ।
मदनतुल्यवपुः सुखभाजनं भवति हास्यरतिः प्रियदर्शनः ॥
निजमिते व्ययवर्तिनि भार्गवे भवति रोगयुतः प्रथमे नरः ।
तदनु दम्भपरायणचेतनः कृशबलो मलिनः सहितः सदा ॥

[इति शुक्रफलम्]

७ अथ शनिफलम्—

सततमल्पगतिर्मदपीडितस्तपनजे तनुगे खलु चाऽधमः।
भवति हीनकचः कुशविग्रहो निजसुहृद्रिपुसद्मनि मानवः ॥ १ ॥
धननिकेतनवर्तिनि भानुजे भवति वाक्यसहः स धनान्वितः।
चपललोचनसंचयने रतो भवति चौरपरो नियतं सदा ॥ २ ॥
सहजमन्दिरगे तपनात्मजे भवति सर्वसहोदरनाशकः।
तदनुकूलनृपेण समो नरः स्वसुतपुत्रकलत्रसमन्वितः ॥ ३ ॥
बन्धुस्थितो भानुसुतो नराणां करोति बन्धोर्निधनं च रोगी।
स्त्रीपुत्रभृत्येन विनाकृतश्च ग्रामान्तरे चाऽसुखदः स वक्री ॥ ४ ॥
शनैश्चरे पञ्चमशत्रुगेहे पुत्रार्थहीनो भवतीह दुःखम्।
तुङ्गे निजे मित्रगृहे च पङ्गौ पुत्रैकभागी भवतीति कश्चित् ॥ ५ ॥
नीचे रिपोर्नीचकुलक्षयं च षष्ठं शनिर्गच्छति मानवानाम्।
अन्यत्र शत्रून् विनिहन्ति तुङ्गी पूर्णार्थकामान् जनतां ददाति ॥ ६ ॥
विश्रामभूतां विनिहन्ति जायां सूर्यात्मजः सप्तमगश्च रोगान्।
धत्ते पुनर्दम्भधराङ्गहीनं मित्रस्य वंशे दुहिता सुहृच्च ॥ ७ ॥
शनैश्चरे चाष्टमगे मनुष्यो देशान्तरे तिष्ठति दुःखभागी।
चौर्यापराधेन च नीचहस्ते पञ्चत्वमाप्नोत्यथ नेत्ररोगी ॥ ८ ॥
धर्मस्थ-पङ्गुर्बहुदम्भकारी धर्मार्थहीनः पितृवञ्चकश्च।
मदानुरक्तो निधनी च रोगी पापिष्ठभार्यापरहीनवीर्यः ॥ ९ ॥
शनैश्चरे कर्मगृहस्थितेऽपि महाधनी नृत्यजनानुरक्तः।
प्राप्तप्रवासे नृपसद्मवासी न शत्रुवर्गाद्भयमेति मानी ॥१०॥
सूर्यात्मजे चायगते मनुष्यो धनी विमृश्यो बहुभोग्यभागी।
शीतानुरागी मुदितः सुशीलः स बालभावे भवतीति रोगी ॥११॥
व्यये शनौ पञ्चगणाधिनाथो मदान्वितो हीनवपुः सुदुःखी।
जङ्घाव्रणी भूरमतिः कृशाङ्गो बधे रतः पक्षिगणस्य नित्यम् ॥१२॥

[इति शनिफलम्]

८ अथ राहुफलम्—

रोगी सदा देवरिपौ तनुस्थे कुले च धारी बहुजल्पशीलः ।
रक्तेक्षणः पापरतः कुकर्मरतः सदा साहसकर्मदक्षः ॥ १ ॥
राहौ धनस्थे कृतचौरवृत्तिः सदा विलिप्तो बहुदुःखभागी ।
मत्स्येन मांसेन सदा धनी च सदा वसेन्नीचगृहे मनुष्यः ॥ २ ॥
भ्रातुर्विनाशं प्रददाति राहुस्तृतीयगेहे मनुजस्य देही ।
सौख्यं धनं पुत्रकलत्रमित्रं ददाति तुङ्गी गजवाजिभृत्यान् ॥ ३ ॥
राहौ चतुर्थे धनबन्धुहीनो ग्रामैकदेशे वसति प्रकृष्टः ।
नीचानुरक्तः पिशुनश्च पापी पुत्र्यैकभागी कृशयोषिदासाम् ॥ ४ ॥
राहुः सुतस्थः शशिनानुगो हि पुत्रस्य हर्ता कुपितः सदैव ।
गेहान्तरे सोऽपि सुतैकमात्रं दत्ते प्रमाणं मलिनं कुचैलम् ॥ ५ ॥
षष्ठे स्थितः शत्रुविनाशकारी ददाति पुत्रं च धनानि भोगान् ।
स्वर्भानुरुच्चैरखिलाननर्थान् हन्त्यन्ययोषिद्गमनं करोति ॥ ६ ॥
जायास्थराहुर्धनहानिजायां ददाति नार्यो विविधांश्च भोगान् ।
पापानुरक्तां कुटिलां कुशीलां ददाति शेषैर्बहुभिर्युतश्च ॥ ७ ॥
राहुः सदा चाऽष्टममन्दिरस्थो रोगान्वितं पापरतं प्रगल्भम् ।
चौरं कृशं कापुरुषं धनाढ्यं मायामतीतं पुरुषं करोति ॥ ८ ॥
धर्मस्थिते चन्द्ररिपौ मनुष्यश्चाण्डालकर्मा पिशुनः कुचैलः ।
ज्ञातिप्रमोदे निरतश्च दीनः शत्रोः कुलाद्भीतिमुपैति नित्यम् ॥ ९ ॥
कामातुरः कर्मगते च राहुः परार्थलोभी मुखरश्च दीनः ।
म्लानो विरक्तः सुखवर्जितश्च विहारशीलश्चपलोऽतिदुष्टः ॥१०॥
आयस्थिते सोमरिपौ मनुष्यो दान्तो भवेन्नीलवपुः सुमूर्तिः ।
वाचाऽल्पयुक्तः परदेशवासी शास्त्रार्थवेत्ता चपलो निलज्जः ॥११॥
रिपुस्थिते सोमरिपौ नराणां धर्मार्थहीनो बहुदुःखतप्तः ।
कान्ताविमुक्तश्च विदेशवासी सुखैश्च हीनः कुनखी कुवेषः ॥१२॥

स्पष्टार्थाः ।

[इति राहुफलम्]

[अथ बालारिष्टयोगः—]

षष्ठाष्टमगश्चन्द्रः सद्यो मरणाय पापसन्दृष्टः ।
अष्टाभिः शुभदृष्टैर्वर्षैर्मिश्रैस्तदर्धेन ॥ १ ॥

[अस्य भङ्गः—]

पक्षे सिते भवति जन्म यदि क्षयायां
कृष्णे तथाऽहनिशुभाऽशुभदृश्यमानः ।
तं चन्द्रमा रिपुविनाशगतोऽपि यत्ना-
दापत्सु रक्षति पितेव शिशुं न हन्ति ॥ २ ॥

स्पष्टार्थाः ।

[चलितग्रहज्ञानप्रकार—]

जो ग्रह जिस भाव में पड़ा हो उस भाव की आगे व पीछें वाली स्पष्ट की हुई सन्धि को देखे । यदि स्पष्ट ग्रह पिछली सन्धि से अधिक व आगे की सन्धि से न्यून हो तो उसे उसी भाव में समझना चाहिते । अगर पिछली सन्धि से कम हो तो उसे पीछें के भाव में जानना चाहिये । और यदि आगे की सन्धि से अधिक हो तो उसे अग्रिम भाव में जानना चाहिये । यथा—

जन्माङ्गमिदम्



चलिताङ्गमिदम्



यहाँ पर जन्मकुण्डली में चन्द्रमा चतुर्थ भाव में है चतुर्थभाव की स्पष्ट सन्धि १।२४।२८।३।५० से स्पष्ट चन्द्रमा १।२२।११।२४ कम है,

अतः चतुर्थ भाव ही में रह गया । यदि इस सन्धि से अधिक होता तो पञ्चम भाव में चला जाता एवं स्पष्ट सूर्य ७।२८।५१।६ है और दशम स्थान में पड़ा है किन्तु दशम की सन्धि ७।२४।२८।३।५० से अधिक होने के कारण एकादश भाव में चला गया । इसी तरह सब ग्रहों का जानना । पिछली सन्धि का अर्थ है पिछले भाव की सन्धि व अगली सन्धि का अर्थ है उसी भाव की सन्धि । इन्हीं सन्धिद्वय के मध्य में रहने पर ग्रह उस भाव का पूर्ण फल देगा तथा अगली सन्धि से अधिक हो जाने पर आगे वाले भाव का व पिछली सन्धि से कम होने पर पीछे वाले भाव का फल देगा । सन्धितुल्य ग्रह के होने पर किसी भी भाव का फल नहीं देता ।

[अथाऽऽयुर्दायोपयोगिनीस्पष्टहोरालग्नानयनम्]

द्विघ्नेष्टनाड्यः पञ्चाप्ता यच्छेषं तत्पलीकृतम् ।
दशाप्तमंशास्ते योज्या रवौ होरोदयं भवेत् ॥

हिन्दी-टीका—इष्ट घटी को २ से गुणा करके ५ का भाग देने से लब्धि राश्यात्मक होती है । शेष को पलात्मक बनाकर १० का भाग देने से लब्ध अंशादि होगा । इन राशि तथा अंशादिकों को रवि में जोड़ने से स्पष्ट राश्यादि होरालग्न होती है ।

उदाहरण—इष्टकाल ६।५५ इसका दूना करने से १६।५० हुआ । ५ का भाग देने से लब्धि ३ राशि हुई । शेष को ६० से गुणा करके ५० जोड़ने से २६० पल हुआ । इसमें १० का भाग देने से २६ अंश हुआ । इन ३ रा २६ अंश को स्पष्ट सूर्य में जोड़ दिया, यथा ७।२८।५१।६ + ३।२६ = ११।२७।५१।६ होरालग्न हुई ।

[अथ विंशोत्तरीमहादशाज्ञानम्]

कृत्तिकादिषु यथोत्तरं रविश्चन्द्रभूमिसुतराहुमन्त्रिणः ।
सौरिसोमसुतकेतुभार्गवाः प्राक्तनैर्निगदिता दशाधिपाः ।

हि० टी०—कृत्तिका नक्षत्र से प्रारम्भ करके वर्तमान जन्म के नक्षत्र तक गणना करने पर क्रम से सूर्य, चन्द्रमा, भौम, राहु, बृहस्पति, शनि, बुध, केतु तथा शुक्र की महादशा पूर्वाचार्यों ने कहा है। यदि गणना करने पर नव से ज्यादा संख्या हो तो उसमें नव का भाग देकर शेष तुल्य ग्रहों के क्रम से दशाधिपति जानना।

उदाहरण—जैसे यहाँ पर रोहिणी नक्षत्र में किसी का जन्म है तो कृत्तिका से रोहिणी की संख्या २ है अतः चन्द्रमा की महादशा में जन्म हुआ। ऐसे ही सर्वत्र जानना।

[अथ ग्रहाणां दशावर्षप्रमाणमाह]

रस-दशाऽद्रि-पुराण-महीभृतो विधुविहीननखा अगभूमयः।
गिरि-नखा-रविचन्द्रकुजाअगुर्गुरु-शनिज्ञककेतु-सिताब्दपाः॥

हि० टी०—सूर्य की महादशा ६ वर्ष, चन्द्रमा की १० वर्ष, भौम की ७ वर्ष, राहु की १८ वर्ष, बृहस्पति की १६ वर्ष, शनि की १९ वर्ष, बुध की १७ वर्ष एवं शुक्र की महादशा २० वर्ष तक भोग करती है।

जैसे यहाँ रोहिणी नक्षत्र में जन्म होने से चन्द्रमा की महादशा में जन्म हुआ, चन्द्रमा की महादशा १० वर्ष तक की होती है।

[अथ जन्मकाले दशाभुक्तभोग्यज्ञानाय प्रकारः]

निजजन्मनि या दशामितिर्जनिभस्यैतघटीसमाहता।
सकलर्क्षघटीविभाजिता जनिभुक्ता हि दशा समादिका॥
परिशोध्य दशामितौ ततः परिशेषस्य फलं विचिन्तयेत्॥

हि० टी—मनुष्य के जन्मकाल में जिस ग्रह की महादशा चल रही हो उसके वर्षप्रमाण से पलात्मक भयात को गुणा कर पलात्मक भभोग से भाग देने पर जो प्रथम लब्धि आवे उसको वर्ष जानना। फिर शेष को बारह से गुणा कर पलात्मक भभोग से भाग देने पर जो

द्वितीय लब्धि आवे उसे मास जानना । इस प्रकार ३० और ६० तथा फिर ६० से क्रम से गुणा कर पूर्वोक्त भाजक से भी भाग देने पर दिन, दण्ड तथा पल का ज्ञान होगा । इस प्रकार वर्षादि भुक्त दशा होती है । इसी को ग्रह के सम्पूर्ण दशा वर्ष मान में घटाने से शेष को वर्षादि भोग्य दशा जानना ।

उदाहरण—भयात ५८।५० भभोग ६४।२१ रोहिणी में जन्म होने से चन्द्रमा की महादशा वर्ष प्रमाण १० से पलात्मक भयात ३५३० को गुणा करने से ३५३०० हुआ । इसमें पलात्मक भभोग ३८६१ से भाग देने से लब्धि ९ वर्ष हुआ । शेष ५५१ को १२ से गुणा करके पूर्वोक्त भाजक से ही भाग देने पर लब्धि १ मास हुआ । शेष २७५१ को ३० में गुणा करके उसी भाजक से भाग देने पर लब्धि २१ दिन हुआ । पुनः शेष में ६० का गुणा करके भाजक से भाग देने पर लब्धि २२ दण्ड हुआ । एवं फिर शेष को ६० से गुणा कर भाग देने पर लब्धि ३१ पल हुआ । इस तरह से वर्षादि ९।१।२१।२२।३१ चन्द्रमा की भुक्त दशा हुई । इसको चन्द्रमा के दशा वर्ष १० में से घटाने पर ०।१०।८।३७।२९ वर्षादि चन्द्रमा की भोग्य दशा हुई । इसी तरह और ग्रहों का जानना । इसको विंशोत्तरी महादशा कहते हैं । सब ग्रहों की दशा मिलकर १२० वर्ष की होती है ।

[अथाऽन्तर्दशाज्ञानम्]

स्वदशा रामगुणिता तद्दशा गुणिता पुनः ।
खरामभागतो लब्धं फलं मासादिकं भवेत् ॥

हि० टी०—वर्तमान ग्रह के दशा वर्ष को ३ से गुणा देना फिर उसमें जिस ग्रह का अन्तर निकालना हो उसके दशामान से गुणा करना और ३० का भाग देना तो फल मासादिक होगा । जहाँ १२ महीना से अधिक होवे वहाँ १२ का भाग लगाकर लब्ध को वर्ष और शेष को महीना जानना । जिस ग्रह की महादशा रहती है उसी की अन्तर्दशा भी पहले बीतती है ।

उदाहरण—जैसे यहाँ चन्द्रमा की महादशा १० वर्ष की है इसको ३ से गुण दिया तो ३० हुआ इसमें पहले चन्द्रमा का ही अन्तर निकालना है इसलिए पुनः इसको १० से गुणने से ३०० हुए। इसमें ३० का भाग देने से ० वर्ष १० माह ० दिन चन्द्रमा का अन्तर हुआ। इसी प्रकार और ग्रहों के अन्तर का भी ज्ञान कर लेना।

सूर्यान्तिरम् ६

ग्र.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ध्रु.
व.	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०
मा.	३	६	४	१०	९	११	१०	४	०	०
दि.	१८	०	६	२४	१८	१२	६	६	०	१८

चन्द्रान्तरम् १०

ग्र.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	ध्रु.
व.	०	०	१	१	१	१	०	१	०	०
मा.	१०	७	६	४	७	५	७	८	६	१
दि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

भौमान्तरम् ७

ग्र.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	ध्रु.
व.	०	१	०	१	०	०	१	०	०	०
मा.	४	०	११	१	११	४	२	४	७	०
दि.	२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०	२१

राह्वन्तरम् १८

ग्र.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	ध्रु.
व.	२	२	२	२	१	३	०	१	१	०
मा.	८	४	१०	६	०	०	१०	६	०	१
दि.	१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८	२४

गुर्वन्तरम् १६

ग्र.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	ध्रु.
व.	२	२	२	०	२	०	१	०	२	०
मा.	१	६	३	११	८	९	४	११	४	१
दि.	१८	१२	६	६	०	१८	०	६	२४	१८

शन्यन्तरम् १९

ग्र.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	ध्रु.
व.	३	२	१	३	०	१	१	२	२	०
मा.	०	८	१	२	११	७	१	१०	६	१
दि.	३	९	९	०	१२	०	९	६	१२	२७

बुधान्तरम् १७

ग्र.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	ध्रु.
व.	२	०	२	०	१	०	२	२	२	०
मा.	४	११	१०	१०	५	११	६	३	८	१
दि.	२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९	२१

केत्वन्तरम् ७

ग्र.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा	बृ.	श.	बु.	ध्रु.
व.	०	१	०	०	०	१	०	१	०	०
मा.	४	२	४	७	४	०	११	१	११	०
दि.	२७	०	६	०	२७	१८	६	९	२७	२१

शुक्रान्तरम् २०

ग्र.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	ध्रु.
व.	३	१	१	१	३	२	३	२	१	०
मा.	४	०	८	२	०	८	२	१०	२	२
दि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

[अथ प्रकारान्तरेण अन्तर्दशादिज्ञानम्]

महादशाधिपति के वर्ष में या अन्तर्दशाधिपतियों के मान में १२० का भाग देने से ध्रुव अर्थात् १ वर्ष का मान होता है। या दशाधिपति के वर्ष का त्रिगुणित दिन अन्तर्दशा की ध्रुवा होती है। दशा एवं अन्तर्दशा के स्वामियों के वर्षों के गुणन फल में ४० का भाग देने से प्रत्यन्तर्दशा की ध्रुवा होती है। दशाधिपति, अन्तर्दशाधिपति व प्रत्यन्तर्दशाधिपतियों के वर्षों के गुणनफल में ८० का भाग देने से सूक्ष्म दशा की घटयादि ध्रुवा होती है। इसी तरह दशा, अन्तर्दशा, और सूक्ष्म दशा के स्वामियों के वर्ष के गुणनफल में १६० का भाग देने से प्राणदशा के लिये पलादिक ध्रुवा होगी।

ध्रुवा को १० से गुणा करने पर चन्द्रमा का और ६ से गुणा करने पर सूर्य का दशामान होगा। सूर्य एवं चन्द्रमा का योग करने से बृहस्पति का एवं बृहस्पति में ध्रुवा जोड़ने से बुध का, बुध में जोड़ने से राहु का, राहु में जोड़ने से शनि का, शनि में ध्रुवा जोड़ने से, या चन्द्रमा का दूना करने से शुक्र का मान होगा। सूर्य में ध्रुवा जोड़ने से मंगल और केतु का मान होगा। दशा वर्ष प्रमाण को संवत् में तथा मासादि को राश्यादि सूर्य में जोड़ना चाहिए। इस प्रकार करने से दशांशदशाधिपतियों के भोग्यकाल का ज्ञान होगा।

[१] सूर्य की दशा और सूर्य के ही अन्तर में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ध्रु.
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि.	५	९	६	१६	१४	१७	१५	६	१८	०
द.	२४	०	१८	१२	२४	६	१८	१८	०	५४

सूर्य की दशा और चन्द्रमा के अन्तर में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	ध्रु.
मा.	०	०	०	०	०	०	०	१	०	०
दि.	१५	१०	२७	२४	२८	१५	१०	०	९	१
द.	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	३०

सूर्य की दशा और भौम की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के	शु.	सू.	चं.	ध्रु.
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि.	७	१८	१६	१९	१७	७	२१	६	१०	१
द.	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	१८	३०	३

सूर्य की दशा और राहु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	ध्रु०
मा०	१	१	१	१	०	१	०	०	०	०
दि०	१८	१३	२१	१५	१८	२४	१६	२७	१८	२
द०	३६	१२	१८	५४	५४	०	१०	०	५४	४०

सूर्य की दशा और गुरु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	ध्रु०
मा०	१	१	१	०	१	०	०	०	१	०
दि०	८	१५	१०	१६	१८	१४	२४	१६	१३	२
द०	२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२	२४

सूर्य की दशा और शनि की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	श०	बृ०	ध्रु०
मा०	१	१	०	१	०	०	०	१	१	०
दि०	२४	१८	१९	२७	१७	२८	१९	२१	१५	२
द०	९	२७	५७	०	६	३०	५७	१८	३६	५१

सूर्य की दशा और बुध की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	ध्रु०
मा०	१	०	१	०	०	०	१	१	१	०
दि०	१३	१७	२१	१५	२५	१७	१५	१०	१८	२
द०	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	२७	३३

सूर्य की दशा और केतु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	ध्रु०
मा०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि०	७	२१	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	१
द०	२१	०	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	३

सूर्य की दशा और शुक्र के अन्तर में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	ध्रु०
मा०	२	०	१	२	१	१	१	१	०	०
दि०	०	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	३
द०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

[२] चन्द्रमा की दशा और चं० ही की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	चं.	मं.	रा	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू०	ध्रु.
मा.	०	०	१	१	१	१	०	१	०	०
दि.	२५	१७	१५	१०	१७	१२	१७	२०	१५	२
द.	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	३०

चं. की दशा, मं. की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	ध्रु.
मा.	०	१	०	१	०	०	१	०	०	०
दि.	१२	१	२८	३	२६	१२	५	१०	१७	१
द.	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	३०	४५

चं. की दशा, राहु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	ध्रु.
मा.	२	२	२	२	१	३	०	१	१	०
दि.	२१	१२	२५	१६	१	०	२७	१५	१	४
द.	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०	३०

चन्द्रमा की दशा, बृहस्पति की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	श.	ध्रु.
मा.	२	२	२	०	२	०	१	०	२	०
दि.	४	१६	८	२८	२०	२४	१०	२८	१२	४
द.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्रमा की दशा, शनि की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	श.	बृ.	ध्रु.
मा.	३	२	१	३	०	१	१	२	२	०
दि.	०	२०	३	५	२८	१७	३	२५	१६	४
द.	१५	४५	१५	०	३०	३०	१५	३०	०	४५

चन्द्रमा की दशा, बुध की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	ध्रु.
मा.	२	०	२	०	१	०	२	२	२	०
दि.	१२	२९	२५	२५	१२	२९	१६	८	२०	४
द.	१५	४५	०	३०	३०	४५	३०	०	४५	१५

चं० की दशा, केतु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	ध्रु.
मा.	०	१	०	०	०	१	०	१	०	०
दि.	१२	५	१०	१७	१२	१	२८	३	२९	१
द.	१५	०	३०	३०	१५	३०	०	१५	४५	४५

चन्द्रमा की दशा, शुक्र की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	ध्रु०
मा०	३	१	१	१	३	२	३	२	१	०
दि०	१०	०	२०	५	०	२०	५	२५	५	५
द०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्रमा की दशा, सूर्य की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	सू०	चं.	मं.	रा	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ध्रु.
मा०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०
दि०	९	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०	१
द०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	३०

[३] मंगल की दशा और मं. की ही अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	ध्रु.
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि.	८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२	१
द.	३४	३	३६	१६	४९	३४	३०	२१	१३	१३
प.	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०

मं. की दशा, राहु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	ध्रु.
मा.	१	१	१	१	०	२	०	१	०	०
दि.	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२	३
द.	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३	९

मंगल की दशा, बृहस्पति की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	ध्रु.
मा.	१	१	१	०	१	१	०	०	१	०
दि.	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०	२
द.	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	४८

मंगल की दशा, शनि की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	ध्रु.
मा.	२	१	०	२	०	१	०	१	१	०
दि.	३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३	३
द.	१०	३१	१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२	१९
प.	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

मंगल की दशा, बुध की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	ध्रु.
मा.	१	०	१	०	०	०	१	१	१	०
दि.	२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६	२
द.	३४	४९	३०	५१	४५	४३	३३	३६	३१	५८
प.	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

मंगल की दशा, केतु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	ध्रु.
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि.	८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०	१
द.	३४	३०	२१	१५	३४	३	३६	१६	४९	१३
प.	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

मंगल की दशा, शुक्र की अन्तर्दशा मे प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	ध्रु.
मा.	२	०	१	०	२	१	२	१	०	०
दि.	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४	३
द.	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	३०

मंगल की दशा, सूर्य की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ध्रु.
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि.	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१	१
द.	१	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	३

मंगल की दशा, चन्द्रमा की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के	शु.	सू.	ध्रु.
मा.	०	०	१	०	१	०	०	१	०	०
दि.	१७	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०	१
द.	३	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	४५

[४] राहु की दशा और राहु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	ध्रु०
मा०	४	४	५	४	१	५	१	२	१	०
दि०	२५	९	३	१७	२६	१२	१८	२१	२६	८
द०	४८	३	५४	४२	४२	०	३६	०	२	६

राहु की दशा, बृहस्पति की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	ध्रु.
मा.	३	४	४	१	४	१	२	१	४	०
दि.	२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०	९	७
द.	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	३६	१२

राहु की दशा, शनि की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	ध्रु.
मा.	५	४	१	५	१	२	१	५	४	०
दि.	१२	२५	२६	२१	२१	२५	२६	३	१६	८
द.	२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	३३

राहु की दशा, बुध की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	ध्रु.
मा.	४	१	५	१	२	१	४	४	४	०
दि.	१०	२३	३	१५	१६	२३	१७	२	२५	७
द.	३	३३	०	५४	३०	३३	४२	२४	२१	३६

राहु की दशा, केतु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	ध्रु.
मा.	०	२	०	१	०	१	१	१	१	०
दि.	२२	३	१८	१	२२	२६	२०	२६	२३	३
द.	३	०	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३	६

राहु की दशा, शुक्र की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	ध्रु.
मा.	६	१	३	२	५	४	५	५	२	४
दि.	०	२४	०	३	१२	२४	२१	३	३	६
द.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहु की दशा, सूर्य के अन्तर में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	ध्रु०
मा०	०	०	०	१	१	१	१	०	१	०
दि०	१६	२७	१८	१८	१३	२१	१५	१८	२४	२
द०	१२	०	५४	३६	१२	१८	५४	५४	०	४२

राहु की दशा, चन्द्रमा की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	ध्रु०
मा०	१	१	२	२	२	२	१	३	०	०
दि०	१५	१	२१	१२	२५	१६	१	०	२७	४
द०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	३०

राहु की दशा, भौम की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	ध्रु०
मा०	०	१	१	१	१	०	२	०	१	०
दि०	२२	२६	२०	२६	२३	२२	३	१८	१	३
द०	३	४२	२४	५१	३३	३	३०	[illegible]	३०	६

राहु की दशा और बृहस्पति की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	ध्रु०
मा०	३	४	३	१	४	१	२	१	३	०
दि०	१२	१	१८	१४	८	८	४	१४	२५	६
द०	२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२	२४

बृहस्पति की दशा, शनि की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	ध्रु.
मा.	४	४	१	५	१	२	१	४	४	०
दि.	२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६	१	७
द.	२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८	१६	३६

बृहस्पति की दशा, बुध की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	ध्रु.
मा.	३	१	४	१	२	१	४	३	४	०
दि.	२५	१७	१६	१०	८	१७	२	१८	९	६
द.	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२	४८

बृहस्पति की दशा, केतु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	ध्रु.
मा.	०	१	०	०	०	१	१	१	१	०
दि.	१९	२६	१६	२८	१९	२०	१४	२३	१७	२
द.	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२	३६	४८

बृहस्पति की दशा, शुक्र की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा	बृ.	श.	बु.	के.	ध्रु.
मा.	५	१	२	१	४	४	५	४	१	०
दि.	१०	१८	२०	२६	२४	८	२	१६	२६	८
द०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

बृहस्पति की दशा, सूर्य की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	ध्रु.
मा.	०	०	०	१	१	१	१	०	१	०
दि.	१४	२४	१६	१३	८	१५	१०	१६	१८	२
द.	२४	०	४८	१२	२४	३६	४८	४८	०	२४

बृहस्पति की दशा, चन्द्रमा की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	ध्रु.
मा.	१	०	२	२	२	२	०	२	०	०
दि.	१०	२८	१२	४	१६	८	२८	२०	२४	४
द.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

बृहस्पति की दशा, मंगल की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	ध्रु.
मा.	०	१	१	१	१	१	१	०	०	०
दि.	१९	२०	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	२
द.	३६	२४	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	४८

बृहस्पति की दशा, राहु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	ध्रु.
मा.	४	३	४	४	१	४	१	२	१	०
दि.	९	२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०	७
द.	३६	११	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	१२

[६] शनि की दशा और शनि की ही अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	ध्रु.
मा.	५	५	२	६	१	३	२	५	४	०
दि.	२१	३	३	०	२४	०	३	१२	२४	९
द.	२८	२५	१०	३०	९	१५	१०	२७	२४	१
प.	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

शनि की दशा, बुध की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	ध्रु.
मा.	४	१	५	१	२	१	४	४	५	०
दि.	१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९	३	८
द.	१६	३१	३०	२७	४५	३१	१	१२	२५	४
प.	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

शनि की दशा, केतु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	ध्रु.
मा.	०	०	०	१	०	१	१	२	१	०
दि.	२३	६	१९	३	२३	२९	२३	३	२६	३
द.	१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२	१०	३१	१९
प.	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

शनि की दशा, शुक्र की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	ध्रु.
मा.	६	१	३	२	५	५	६	५	२	०
दि.	१०	२७	५	६	२१	२	०	११	६	९
द.	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	३०

शनि की दशा, सूर्य की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ध्रु.
मा.	०	०	०	१	१	१	१	०	१	०
दि.	१७	२८	१९	२१	१५	२४	१८	१९	२७	२
द.	६	३०	५७	८	३६	९	२७	५७	०	५१

शनि की दशा, चन्द्रमा की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	ध्रु.
मा.	१	१	२	२	३	२	१	३	०	०
दि.	१७	३	२५	१६	०	२०	३	५	२८	४
द.	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	४५

शनि की दशा, मंगल की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	ध्रु.
मा.	०	१	१	२	१	०	२	०	१	०
दि.	२३	२९	२३	३	२६	२३	६	१९	३	०
द.	१६	५१	१२	१०	३१	१६	३०	५७	१५	१९
प.	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०

शनि की दशा, राहु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	ध्रु.
मा.	५	४	५	४	१	५	१	२	१	०
दि.	३	१६	१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९	८
द.	५४	४८	२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	३३

शनि की दशा, गुरु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	ध्रु.
मा.	४	४	४	१	५	१	२	१	४	०
दि.	१	२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६	७
द.	३६	२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८	३६

[७] बुध की दशा, बुध की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	ध्रु.
मा.	४	१	४	१	२	१	४	३	४	०
दि.	२	२०	२४	१३	१२	२०	१०	२५	१७	७
द.	४९	३४	३०	२१	१५	३४	३	३६	१६	१३
प.	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

बुध की दशा और केतु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	ध्रु.
मा.	०	१	०	०	०	१	१	१	१	०
दि.	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६	२०	२
द.	४९	३०	५१	४५	४९	३३	३६	३१	३४	५८
प.	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

बुध की दशा, शुक्र की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	ध्रु.
मा.	५	१	२	१	५	४	५	४	१	०
दि.	२०	२१	२५	२९	३	१६	११	२४	२९	८
द.	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	३०

बुध की दशा, सूर्य की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ध्रु.
मा.	०	०	०	१	१	१	१	०	१	१
दि.	१५	२५	१७	१५	१०	१८	१३	१७	२१	२
द.	१८	३०	५१	५४	४८	२७	२१	५	०	३३

बुध को दशा और चन्द्रमा की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	ध्रु०
मा०	१	०	२		२	२	०	२	०	०
दि०	१२	२९	१६	८	२०	१२	२६	२५	२५	४
द०	३०	४५	३०	०	४५	१५	४५	०	३०	१५

बुध की दशा, मंगल की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	ध्रु०
मा०	०	१	१	१	१	०	१	०	०	०
दि०	२०	२३	१७	२६	२०	२०	२९	१७	२६	२
द०	४६	३३	३६	३१	३४	४६	३०	५१	४५	५८
प०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०

बुध की दशा, राहु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	ध्रु०
मा०	४	४	४	४	१	५	१	२	१	०
दि०	१७	२	२५	१०	२३	३	१५	१६	२३	७
द०	४९	२४	२१	३	३३	०	५४	३०	३३	३९

बुध की दशा, गुरु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	ध्रु.
मा.	३	४	३	१	४	१	२	१	४	०
दि.	१८	९	२५	१७	१६	१०	८	१७	२	६
द.	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	४८	४८

बुध की दशा, शनि की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं,	रा.	बृ.	ध्रु.
मा.	५	४	१	५	१	२	१	४	४	०
दि.	३	१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९	८
द,	२५	१६	३१	३०	२७	४५	३१	२१	१२	४
प.	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

[८] केतु की दशा, केतु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र,	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	ध्रु
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि.	८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०	२
द.	३४	३०	२१	१५	३	३	३६	१६	४९	५८
प.	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

केतु की दशा, शुक्र की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	ध्रु.
मा.	२	०	१	०	२	१	२	१	०	०
दि.	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४	३
द,	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	३०

केतु की दशा और सूर्य की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ,	श.	बु.	के.	शु.	ध्रु
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि.	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१	१
द.	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	३

केतु की दशा, चन्द्रमा की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	ध्रु.
मा.	०	०	१	०	१	०	०	१	०	०
दि.	१७	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०	१
द.	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	४५

केतु की दशा, मंगल की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	ध्रु.
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि.	८	२२	१९	१३	२०	८	२४	७	१२	१
द.	३४	३	३६	१६	४९	३४	३०	२१	१५	१३
प.	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	३०	३०

केतु की दशा, राहु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	ध्रु.
मा.	१	१	१	१	०	२	०	१	०	०
दि.	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२	३
द.	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३	९

केतु की दशा, गुरु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	ध्रु.
मा.	१	१	१	१	१	०	०	०	२	०
दि.	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०	२
द.	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	४८

केतु की दशा, शनि की दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	ध्रु.
मा.	२	१	०	२	०	१	०	१	१	०
दि.	३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३	३
द.	१०	३१	१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२	१९
प.	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

केतु की दशा, बुध की दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	ध्रु.
मा.	१	०	१	०	०	०	१	१	१	०
दि.	२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६	२
द.	३४	४९	३०	५१	४५	४९	३३	३६	३१	५८
प.	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

[९] शुक्र की दशा, शुक्र की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	ध्रु.
मा.	६	२	३	२	६	५	६	५	२	०
दि.	२०	०	१०	१०	०	१०	१०	२०	१०	१०
द.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र की दशा, सूर्य की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ध्रु.
मा.	०	१	०	१	१	१	१	०	२	०
दि.	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०	३
द.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र की दशा, चन्द्रमा की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	ध्रु.
मा.	१	१	३	२	३	२	१	३	१	०
दि.	२०	५	०	२०	५	२५	५	१०	०	५
द.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र की दशा, मंगल की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	ध्रु.
मा.	०	२	१	२	१	०	२	०	१	०
दि.	२४	३	६	६	२६	४	१०	२१	५	३
द.	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०

शुक्र की दशा, राहु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	ध्रु.
मा.	५	४	५	५	२	६	१	३	२	०
दि.	१२	२४	२१	३	३	०	२४	०	३	९
द.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र की दशा, बृहस्पति की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	ध्रु.
मा.	४	५	४	१	५	१	२	१	४	०
दि.	८	२	१६	२६	१०	१८	२०	२६	२४	८
द.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र की दशा, शनि की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	ध्रु.
मा.	६	५	२	६	१	३	२	५	५	०
दि.	०	११	६	१०	२७	५	६	२१	२	९
द.	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

शुक्र की दशा, बुध की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	ध्रु.
मा.	४	१	५	१	२	१	५	४	५	०
दि.	२४	२९	२०	२१	२५	२९	३	१६	११	८
द.	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

शुक्र की दशा, केतु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

ग्र.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	ध्रु.
मा.	०	२	०	१	०	२	१	२	१	०
दि.	२४	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	३
द.	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

[शुभग्रहदशाफल]

आरोग्य, धनवृद्धि, शत्रु का पराजय, इष्टकार्य की सिद्धि, ऐश्वर्य, प्रापश्चिक सुख आदि अनेक अनुभव आपो-आप मिलते हैं। पुरुषग्रह की दशा अन्तर्दशा में पुत्र, स्त्री, नपुंसक ग्रह की दशा अन्तर्दशा में कन्या की प्राप्ति होती है।

[अशुभग्रहदशाफल]

लोकोपवाद, पूर्वस्थान त्याग, विश्वासघात, द्रव्य की हानि, रोग, बीमारी, शरीरकष्ट, हैरानी-परेशानी, आप्तवर्ग के सदस्यों की मृत्यु, मित्रवियोग, बिना कारण विरोध, खेती, व्यापार में हानि आदि ॥२॥ केन्द्र, त्रिकोण के स्वामी शुभग्रह, शेष स्थान के स्वामी अशुभ ग्रह होते हैं ॥ ३ ॥ मारकेश ग्रह की दशा, अन्तर्दशा कष्टप्रद, आयुपूर्ति के समय में मृत्यु कारक होती है। विशेष फल लघुपाराशरी के विचारानुसार होते हैं।

[योगिनीमहादशा]

इसका ज्ञान करने के लिये अश्विनी से प्रारम्भ करके जन्म नक्षत्र पर्यन्त गिने और नक्षत्र संख्या में ३ और जोड़कर ८ का भाग देने से एकादि शेष तुल्य क्रम से मङ्गला, पिङ्गला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा, सङ्कटा इनकी दशा होगी। और मङ्गलादि के क्रम से १।२।३।४।५।६।७ तथा ८ वर्ष तक इनकी दशा रहती है। कुछ लोगों का कहना है कि कृष्ण पक्ष में जिनका जन्म हो उनके लिये अष्टोत्तरी तथा शुक्लपक्ष में जिनका जन्म हो उनके लिये विंशोत्तरी दशा से विचार करना चाहिये। परन्तु मेरे विचार से विन्ध्य पर्वत के दक्षिण में बसने वाले मनुष्यों के लिए अष्टोत्तरी तथा उत्तर में बसनेवालों के लिये विंशोत्तारी दशा से विचार करनेवाला ही मत ठीक है।

[अथ दशाफल—]

तत्राऽऽदौ रविदशाफलम्—

उद्विग्नचित्तपरिखेदितवित्तनाशं क्लेशप्रवास-गद-पीडमहाभिघातम्।

संक्षोभितः स्वजनबन्धुवियोगमेति सूर्यो दशा भवति राजकुलाभिघातः ॥

चन्द्रदशाफलम्—

सम्यग्विभूतिवरवाहन—छत्रमानं क्षेमप्रतापबलवीर्यसुखानि तस्य ।
मिष्टान्नपान-शयनाऽऽसन-भोजनानि चन्द्रो ददाति धनकाञ्चन-भूमिलाभम्॥

भौमदशाफलम्—

शस्त्राभिघातो नृपतेश्च पीडा चौर्याग्निरोगाश्च धनस्य हानिः ।
कार्याभिघातश्च नरस्य दैन्यं भवेद्दशायां धरणीसुतस्य ॥

राहुदशाफलम्—

बुद्धया विहीनमतिविभ्रमसर्वशून्यं विश्वं भयाति विषमा पदमृत्युतुल्यम् ।
व्याधिर्वियोगधनहानिविषानि वार-राहोर्दशा भवति जीवितसंशयं च ॥

गुरुदशाफलम्—

नृपप्रसादं धन-धान्य-पुत्र-कलत्र-मित्रादिसु रत्न-लाभम् ।
नीरोगतां शत्रुजयं च सौख्यं गुरोर्दशा वाञ्छितमातनोति ॥

शनिदशाफलम्—

मिथ्यापवादबधबन्ध-निराश्रयं च मित्रातिवैर-धन-धान्यकलत्रशोकम् ।
आशानिराशकृतनिष्फलसर्वशून्यं कुर्युः शनैश्चरदशा सततं नराणाम् ॥

बुधदशाफलम्—

दिव्याङ्गनावदनपङ्कजषट्पदस्य लीलाविलासवरभोगसमन्वितस्य ।
नानाप्रकारविभवागमकोशवृद्धिः क्षिप्रं पुनर्बुधदशाभिमतार्थसिद्धिः ॥

केतुदशाफलम्—

विषादकर्त्री धन-धान्यहर्त्री सर्वापदां मूलमनर्थकर्त्री ।
भयंकरी रोगविपद्विधात्री केतोर्दशा स्यात्किल जीवहन्त्री ॥

शुक्रदशाफलम्—

मित्रोपचारमाशुभप्रमदाविलासं श्वेतातपत्रनृपपूजितदेशलाभम् ।
हस्त्यश्वयानपरिपूर्णमनोरथाश्च शुक्रे दशा सृजति निश्चलराज्यलक्ष्मीम् ॥

मङ्गलादशाफलम्—

सद्धर्मे द्विज-गोपुरजनोत्कर्षप्रदात्री नृणां
नानाभोगयशोऽर्थसन्नृपवराश्वेप्राङ्गजाप्तीप्रदा ।
सन्माङ्गल्यविभूषणाम्बरचयस्त्रीभोगसंदायिनी
ज्ञानानन्दकरी दशा भवति सा ज्ञेया सदा मङ्गला ॥ १ ॥

पिङ्गलाफलम्--

स्यात्पुंसां यदि पिङ्गला प्रसवतो हृद्रोगशोकप्रदा
नानारोगकुसङ्गदेहमनसो व्याध्यर्दितार्तिप्रदा ।
तृष्णासृग्ज्वरपित्तशूलमलिनस्त्रीपुत्रभृत्याप्तसन्-
मानध्वंसधनव्ययकरी सत्प्रेमहन्त्री खला ॥ २ ॥

धान्याफलम्—

धान्या धन्यतमा धनागमसुखव्यापारभोगप्रदा
पुंसां मानविवृद्धिदा रिपुगणप्रध्वंसिनी सौख्यदा ।
विद्याराजजनप्रबोधसुरतज्ञानांकुरान् वर्धिनी
सत्तीर्थामरसिद्धसेवनरतिर्लभ्या दशा भाग्यतः ॥ ३ ॥

भ्रामरीफलम्—

दुर्गा-ऽरण्य-महीधरोपगह्वरारामातपव्याकुला
दूराद्दूरतरं भ्रमन्ति मृगवत्तृष्णाकुलाः सर्वतः ।
भूपालान्वयजा दशामधिगता ये वै नृपा भ्रामरीम्
स्वं राज्यं प्रविहाय ते स्फुटतरं क्ष्माधो लुठन्ते मुहुः ॥ ४ ॥

भद्रिकाफलम्—

सौहार्द्रं निजवर्गभूसुरसुरेशानां सुहृन्मान्यता
माङ्गल्यं गृहमण्डलेऽखिलमुखव्यापारसक्तं मनः ।
राज्यं चित्रकपोलपालितिलकासम्प्राङ्गनाभिः समं
क्रीडाऽऽमोदभरी दशा भवति चेत्पुंसां हि भद्राऽभिधा ॥५॥

उल्काफलम्—

उल्का चेद्यदि योगिनी गुरुदशा मानार्थगोवाहन-
व्यापाराम्बरहारिणी नृपजनक्लेशप्रदा नित्यशः।
भृत्याऽपत्यकलत्रवैरजननी रम्यापहन्त्री नृणां
हृन्नेत्रोदरकर्णदानपदजा रोगाः स्वदेहे भृशम् ॥ ६ ॥

सिद्धाफलम्—

सिद्धा सिद्धकरी सुभोगजननी मानार्थसंदायिनी
विद्याराजजनप्रतापधन – सद्धर्माप्ति – सञ्ज्ञानदा।
व्यापाराम्बरभूषणादिकसुतोद्वाहादि माङ्गल्यदा
सत्सङ्गान्नृपदत्तराज्यविभवो लभ्या दशा पुण्यतः ॥ ७ ॥

सङ्कटाफलम्—

राज्यभ्रंशाग्निदाहो गृहपुरनगरग्रामगोष्ठेषु पुंसां
तृष्णारोगाङ्गधातुक्षयविकृतिरथो पुत्रकान्तावियोगः।
चेत्स्यान्मोहोऽरिभीतिः कृशतनुलतिका सङ्कटाया विरोधो
नो मृत्युर्जन्मकालाद्यमपि हि विना सङ्कटायोगिनीजा ॥ ८ ॥

स्पष्टार्थाः।

[इति दशाफलम्।]

[अथाऽऽयुर्दायविचारः]

अष्टमं ह्यायुषः स्थानमष्टमादष्टमं च यत्।
तयोरपि व्ययस्थानं मारकस्थानमुच्यते॥

हिन्दी टीका—अष्टम और अष्टम का अष्टम अर्थात् तृतीय—ये आयुःस्थान कहलाते हैं। और इनके जो द्वादश अर्थात् सप्तम और द्वितीय ये मारक स्थान कहे जाते हैं।

तत्राऽप्याद्यव्ययस्थानाद् द्वितीयं बलवत्तरम्।

तथा च

देहतात निधनाधिपा यदा लाभबन्धुयुतधर्मसंस्थिताः।
दीर्घमायुरिह विद्धि तत्परं केन्द्रगाश्च खलु दीर्घदा मताः॥
सहजबन्धुगताः खलखेचराः पणफरेऽपि गता यदि केचन।
त इह मध्यमदाः परतश्च ये त इह लाघवखण्डकरा मता॥

अन्यच्च

अल्पायुर्लग्नपे भानोः रात्रौ मध्ये च मध्यमम्।
मित्रे लग्नेश्वरे तस्य दीर्घमायुरुदाहृतम्॥

अन्यच्च

(१) आयुः पितृदिनेशाभ्याम् (२) प्रथमयोरुत्तरयोर्वा दीर्घम् (३) प्रथमद्वितीययोरन्त्ययोर्वा मध्यमम् (४) मध्यमयोराद्यन्तयोर्वा हीनम् (५) एवं मन्दचन्द्राभ्याम् (६) पितृकालतश्च (७) संवादात् प्रामाण्यम् (८) विसंवादे पितृकालतः (९) पितृलाभगे चन्द्रे चन्द्र-मन्दाभ्याम्।

हि० टी०—सप्तम और द्वितीय इन दो मारक स्थानों में सप्तम से द्वितीय प्रवल मारक होता है। यहाँ पर संक्षेप से आयुर्दाय का विचार लिखते हैं। लग्नेश यदि सूर्य का मित्र हो तो दीर्घायु, सम हो तो

मध्यायु, शत्रु हो तो अल्पायु जानना। लग्न, दशम और अष्टम के स्वामी केन्द्र या एकादश या त्रिकोण में हो तो भी दीर्घायु करते हैं और जो केन्द्र में होवे तो भी दीर्घायु करते हैं। तृतीय और चतुर्थ में पापग्रह हों, या पणकर में कोई ग्रह हों तो वह मध्यायु करता है। इससे अन्य स्थान गतग्रह अल्पायु करते हैं। लग्नेश और अष्टमेश यदि चर राशि में हों वा एक स्थिर में और दूसरा द्विस्वभाव में हो तो दीर्घायु; दोनों स्थिर में हो वा एक चर में और दूसरा द्विस्वभाव में हो तो अल्पायु; दोनों द्विस्वभाव में हों वा एक स्थिर में दूसरा चर में हो तो मध्यायु जानना। लग्न या सप्तम में यदि चन्द्रमा हो तो लग्न चन्द्रमा से अन्यथा शनि चन्द्रमा से और जन्म लग्न तथा होरा लग्न से भी इसी प्रकार आयुर्दाय का विचार करना चाहिये। इसमें तीनों प्रकार से वा दो प्रकार से जो आवे उसको मानना। यदि तीनों प्रकार से तीन प्रकार का हो तो जन्म लग्न और होरा लग्न से जो आवे उसको मानना चाहिये। लग्न यदि विषम हो तो क्रम से, सम हो तो उत्क्रम से, जो अष्टमेश और द्वितीयेश हों उनमें जो बलवान हो वह केन्द्र में हो तो दीर्घायु; पणफर में हो तो मध्यायु; आपोक्लिम में हो तो अल्पायु होता है। इसी प्रकार कारक का जो अष्टमेश और द्वितीयेश हो उनमें जो बलवान हो वह यदि कारक से केन्द्रादि में हो तो दीर्घ, मध्य और अल्प क्रम से जानना चाहिये। लग्न विषम हो तो यदि कारक तृतीय में हो तो सम लग्न होने पर, यदि एकादश में हो तो केन्द्र में अल्पायु, पणफर में मध्यायु, आपोक्लिम में दीर्घायु जानना चाहिये और कारक तथा अष्टमेश एकही हो वा एक साथ बैठे हों तो सर्वदा मध्यायु ही जानना। स्पष्ट ग्रहों में से जिस ग्रह का अंशादि सब से अधिक हो उसको आत्मकारक समझना चाहिये। लग्न, चतुर्थ, सप्तम; दशम इसको 'केन्द्र' कहते हैं। द्वितीय, पञ्चम, अष्टम, एकादश इसको 'पणफर' कहते हैं। तृतीय, षष्ठ, नवम और द्वादश इसको 'आपोक्लिम' कहते हैं।

यहाँ पर ३२ वर्ष तक अल्पायु, ६४ वष तक मध्यायु और १२० वर्ष तक दीर्घायु समझना चाहिये।

अथाऽऽयुर्बोधकचक्रमिदम्

दीर्घायुः	मध्यायुः	अल्पायुः
चरभे १ लग्नेशः चरभे १ अष्टमेशः	चरभे १ लग्नेशः स्थिरभे २ अष्टमेशः	चरभे १ लग्नेशः द्वि. भा. भे ३ रन्ध्रेशः
स्थिरभे २ लग्नेशः द्विस्वभावभे ३ रन्ध्रेशः	स्थिरभे २ लग्नेशः चरभे १ रन्ध्रेशः	स्थिरभे २ लग्नेशः स्थिरभे ३ रन्ध्रेशः
द्विदेहभे ३ लग्नेशः स्थिरभे २ रन्ध्रेशः	द्विदेहभे ३ लग्नेशः द्विदेहभे ३ रन्ध्रेशः	द्विदेहभे ३ लग्नेशः चरभे १ रन्ध्रेशः

यहाँ किसी का इष्टकाल ४८।३४ है, जन्मलग्न ६।५।४७।२५ है, होरालग्न ७।१७।८।१२ है। लग्नेश शनि ०।२१।४८।१२ है। अष्टमेश सूर्य ०।४।८।१२ है। चन्द्रमा ७।६।३४।१६ है। यहाँ सभी प्रकार से विचार करने पर मध्यायु सिद्ध हुआ। इसलिये स्पष्ट शनि सूर्य के योग का आधा करने से ०।१२।५८।१२ अंशादि आया। अतः जैमिनीय सूत्रानुसार अंश वर्षादिक १२।६।१८ कला, मासादिक १२।११।१२ एवं विकलादिनादिक १।१६।४८ आया। इन सभों का योग करने से वर्षादिक १३।१०।०।२८।४८ आया। मध्यायु प्रमाण ६४ वर्ष में घटा देने से वर्षादि ५०।१।२६।३१।१२ स्पष्ट आयु हुई।

[अथ प्रकारान्तरेणाऽऽयुर्विचारः—]

अल्पायुर्व्ययगेऽथवा रिपुगते पापान्विते रन्ध्रपे।
लग्नेशेन युते तु तत्र विबले जातोऽल्पजीवो नरः ॥ १ ॥

कर्मेशरन्ध्रतनुपाबलशालिनश्चेज्जातश्चिरायुरिव नन्दनयोगहीनाः।
द्वावप्यतीव बलिनौ यदि मध्यमायुरेको बली लघुतरायुरनायुरन्यः ॥ २ ॥

रन्ध्राधिपे पापगृहोपयाते दुःस्थानगे पापयुतेऽल्पमायुः ।
शुभान्विते शोभनराशियुक्ते शुभेक्षिते रन्ध्रपते चिरायुः ॥ ३ ॥

नाशस्थे तनुपेऽथवा निधनपे पापेन युक्तेक्षिते
मूढे दृश्यगतेऽथवा रिपुगृहे जातो गतायुर्भवेत् ।
दीर्घायुर्निजतुंगगे शुभयुते केन्द्रे त्रिकोणेऽथवा
रन्ध्रे रन्ध्रपतौ चिरायुरुदयं यातो विलग्नाधिपे ॥ ४ ॥

लग्नादन्त्यगृहाधिपे बलवती स्वर्क्षे चिरायुः सुखी
लग्नेशो यदि रन्ध्रपश्च बलिनौ केन्द्रस्थितौ चेत्तथा ।
आधानोदयराशितोऽष्टमगृहादन्ये रणं जन्मभम्
शुक्रज्ञामरवन्दितेक्षितयुतं यद्यायुरारोग्यभाक् ॥ ५ ॥

प्रकारान्तरेण—

केन्द्राङ्कसंख्यां त्रिगुणी विधाय राह्वारसंख्यां क्रमतो विहीनम् ।
आयुःप्रमाणं कथितं मुनीन्द्रैश्चिरन्तनैर्ज्योतिषिकैः विचार्यम् ॥१॥

लग्नात् यावन्मिते राशौ भवन्ति क्रूरखेचराः ।
तावन्मितेषु वर्षेषु अरिष्टं यस्य विनिर्दिशेत् ॥ १ ॥

हि० टी०—लग्न से जिस-जिस भाव में क्रूर ग्रह हों, उस-उस वर्ष में उस आदमी को कष्ट होता है ।

[अथाऽत्र जैमिनीयसूत्रोक्तायुःसाधने अंशफलज्ञानाय सारिणीयम्]

अंशा	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
वर्ष	३२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
मास	०	०	१	२	३	४	४	५	६	७	८	८	९	१०	११	०
दिन	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०

अंशाः	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
वर्ष	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३
मास	०	१	२	३	४	४	५	६	७	८	८	९	१०	११
दिन	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६

[अथाऽत्र जैमिनीयसूत्रोक्तायुःसाधने कलाफलज्ञानाय सारिणीयम्]

कलाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
मास	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३
दिन	६	१२	१९	२५	२	८	१४	२१	२७	४	१०	१६	२३	२९	६
घटी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

कलाः	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मास	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	६	६
दिन	१२	१८	२५	१	८	१४	२०	२७	३	१०	१६	२२	२९	५	१२
घटी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

कलाः	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
मास	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	९	९	९
दिन	१८	२४	१	७	१४	२०	२६	३	९	१६	२२	२८	५	११	१८
घटी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

कलाः	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
मास	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२
दिन	२४	०	७	१३	२०	२६	२	९	१५	२२	२८	४	११	१७	२४
घटी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

[अथाऽत्र जमिनीयसूत्रोक्तायुःसाधने विकलासारणीयम्]

विकला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१
घटी	६	१२	१९	२५	३२	३८	४४	५१	५७	४	१०	१६	२३	२९	३६
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

विकला	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
दिन	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३
घटी	४२	४८	५५	१	८	१४	२०	२७	३३	४०	४६	५२	५९	५	१२
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

विकला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
दिन	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४
घटी	१८	२४	३१	३७	४४	५०	५६	३	९	१६	२२	२८	३५	४१	४८
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

विकला	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
दिन	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
घटी	५४	०	७	१३	२०	२६	३२	३९	४५	५२	५८	४	११	१७	२४
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

[आयुर्विचारे—]

जन्माद् द्वादशवर्षेषु आयुर्दायं न चिन्तयेत् ।
जप-होम-चिकित्साद्यैर्बालरक्षां तु कारयेत् ॥ १ ॥

हि० टी०—जन्म से बारह वर्ष पर्यन्त आयुर्दाय का विचार नहीं करना चाहिए, तब तक जप, हवन, चिकित्सा द्वारा बालक की रक्षा करनी चाहिए ।

तदीशितुस्तत्र गताः पापिनस्तेन संयुताः ।
तेषां दशाविपाकेषु सम्भवे निधनं नृणाम् ॥

तेषामसम्भवे साक्षाद् व्ययाधीशदशास्वपि ।

हि०टी०—मारकेशग्रह के दशा समय में मारक स्थान में वा मारकेश ग्रह के साथ जो पापीग्रह त्रिषडायेश हों उनकी दशान्तर्दशादि में यदि आयुर्दाय का अन्त होता हो तो मृत्यु कहना और यदि आयुःखण्ड के समाप्ति समय में इन ग्रहों के दशादि समय की प्राप्ति न हो तो लग्न से जो द्वादशेश उसके दशान्तर्दशादि रूप समय में मरण कहना ।

अलाभे पुनरेतेषां सम्बन्धेन व्ययेशितुः ।
क्वचिच्छुभानां च दशा ह्यष्टमेशदशासु च ॥

हि० टी०—यदि पूर्वोक्त ग्रहों की दशा न मिलती हो तो द्वादशेश के सम्बन्ध से कहीं कहीं शुभ ग्रहों की भी दशा में मरण कहना और यदि इनकी दशा की भी प्राप्ति न हो तो अष्टमेश की दशा, अन्तर्दशा और प्रत्यन्तर्दशादि समय में मरण कहना ।

केवलानाश्च पापानां दशासु निधनं क्वचित् ।
कल्पनीयं बुधैर्नृणां मारकाणामदर्शने ॥

हि० टी०—पूर्वोक्त किसी मारक ग्रह की दशा यदि नहीं मिलती हो तो केवल पापग्रह की दशा में ही मरण जानना । आयुर्दाय रहते यदि मारक ग्रह की दशा में ही मरण जानना । आयुर्दाय रहते यदि मारक ग्रह की दशा आवे तो उसमें शारीरिक कष्ट ही कहना चाहिये ।

मारकैः सह सम्बन्धान्निहन्ता पापकृच्छनिः ।
अतिक्रम्येतरान् सर्वान् भवत्येव न संशयः ॥

हि० टी०—पाप फल करने वाला जो शनि, वह मारक ग्रहों के साथ सम्बन्ध करने से सब मारक ग्रहों को लाँघ कर, आपही मारक होता है, इसमें सन्देह नहीं है ।

[सप्तमभावविचारः]

सप्तम—दशमांकमध्ये विवाहो वाच्यः । सप्तमेशो यावद्

स्थाने स्थितस्तावद् वर्षे विवाहो वाच्यो वा गुरुदृष्टौ विवाहः स्यादिति। यदा कलत्रनाथे लग्ने सति तदा लग्ननाथेन समान-संख्या विवाहो वाच्यः। यदि च भौमेन दृष्टस्तदा २३ वर्षे विवाहो वाच्यः।

[अथ ग्रहाणां दृष्टिविचारः]

पश्यन्ति सप्तमं (७) सर्वे शनि-जीव-कुजाः पुनः।
विशेषतश्च त्रिदश (३।१०) त्रिकोण (९।५) चतुरष्टमान् (४।८)।

स्पष्टार्थ।

[अथ प्राणपद निकालने की विधि]

* घटी चतुर्गुणा कार्या तिथ्याप्तैश्च पलैर्युता
शेषं पलाद्यं द्विगुणं स्पष्टं प्राणपदं ध्रुवम्
शून्यनागाब्धियोगेन चरागद्वितनौ क्रमात्

[अथ पुत्रपुत्रीसंख्यायोगः]

लग्नेशो यदा शुक्रः पञ्चमस्थः शनेर्गृहे
पुत्रश्चत्वार एवास्य कन्याश्चापि तथा मिताः।
गुरोर्दृष्टिर्भवेत्तत्र द्विर्द्विनष्टं प्रजायते
द्वौ पुत्रौ जीवितौ तस्य भृगुवाक्यं न चाऽन्यथा॥

[अथ भावविचारमाह—]

रूप-लक्षण-वर्णानां क्लेश-दोष-सुखायुषाम्।
वयःप्रमाणजातीनां तनुस्थानान्निरीक्षयेत्॥ १॥

हि० टी०—प्रथम भाव से—रूप (दीर्घ, लघु, स्थूलादि), लक्षण (तिल-मसकादि), वर्ण (गौरकृष्णादि), क्लेश (दुःख), दोष (अव-

---

* जन्मकालीन इष्टघटी।

गुणादि) सुख (धन स्त्री पुत्रादि), वयस् (बालकादि) का प्रमाण जाति (ब्राह्मणादि) इनको लग्न से देखना चाहिये ॥ १ ॥

तनुस्थान (प्रथम भाव) से—शरीर सुख, आरोग्य, रूप, रङ्ग, गुण, स्वभाव, मानसिक स्थिति, सत्यासत्य, आचरण, आयुष्य, शरीर की बाधा, महत्वाकांक्षा, इच्छा, मन की स्थिरता, सुखादि का विचार करना चाहिए।

मणि-मुक्ताफलं स्वर्णं रत्नधातुकदम्बकम्।
क्रयाणकार्घज्ञानानि धनस्थानान्निरीक्षयेत् ॥ २ ॥

हि० टी०—मणि, मोती, सोना, रत्न, (हीरकादि) और धातुसमूह, क्रयाणक (मञ्जिष्ठादि धान्य विशेष) इन सब चीजों की महर्घता समर्घतादिक विचार धन भाव (द्वितीयस्थान) से कहना चाहिए ॥ २ ॥

धनस्थान (द्वितीय भाव) से—मनुष्य की आर्थिक स्थिति, धन नाश अथवा धनसञ्चय, आप्तवर्ग, कौटुम्बिक तथा प्रापञ्चिक सुख-दुःख, नेत्र, वाणी, वक्तृत्व, गर्दन, गला, सुवर्ण, रत्नादि की प्राप्ति, पूर्वोपार्जित द्रव्य लाभ, ऐश्वर्य, आर्थिक उन्नति या अवनति ॥ २ ॥

भगिनीभ्रातृभृत्यानां दासकर्मकृतामपि।
कुर्वीत वीक्षणं विद्वान् सम्यग्दुश्चिक्यवेश्मनि ॥ ३ ॥

हि० टी०—बहिन, भाई, भृत्य (नौकर), दासकर्म (टहल) करनेवाला इन सबों को तृतीयभाव से देखना चाहिये ॥ ३ ॥

सहजस्थान (तृतीय भाव) से—पराक्रम, साहस, महत्वाकांक्षायें, महत्कार्य, भाई, बहिन, नौकर, औषधि, समीप का प्रवास, मित्रता, हस्ताक्षर, मन की रुचि, खाने के पदार्थों में आसक्ति, इच्छा आदि ॥३॥

वाटिका-खलकक्षेत्र-महौषधि-निधीनिह।
विवरादिप्रवेशं च पश्येत् पातालतो बुधः ॥ ४ ॥

हि० टी०—वाटिका (फुलवाड़ी), खलक (धान्य कूटने तथा

मर्दन करने का स्थान), महौषधि, खानि, पर्वत की कन्दरा आदि में प्रवेश इन सब विषयों को पण्डितजन चतुर्थभाव से देखें ॥ ४ ॥

सुहृत् स्थान (चतुर्थ भाव) से—स्थावर, जायदाद वाहनादि सुख, नौकर-चाकर, मातृ सुख व माता का स्वभाव, पूर्वाजित-कमाया हुआ धन, गाँव, घर, भूमि लाभ, भूमिगत धन लाभ, परोपकार के कार्य, मन की स्थिति, ऐश्वर्य, उत्कर्ष, कीर्ति, आयुष्य का आखिरी समय, सब प्रकार के सुखों का विचार आदि ॥ ४ ॥

गर्भापत्यविनेयानां मन्त्रसाधनयोरपि ।
विद्या-बुद्धि-प्रबन्धानां सुतस्थानाद्विनिश्चयः ॥ ५ ॥

हि॰ टी॰—गर्भ, सन्तान, विनेय (शिष्य), मन्त्र अर्थात् मन्त्र का उपदेश लेना और उसका साधन करना, विद्या, बुद्धि, प्रबन्ध (ग्रन्थादि की रचना), इन सबों का निश्चय पञ्चम स्थान से करना चाहिए ॥५॥

सुत स्थान—(पञ्चम भाव) से—विद्या, बुद्धि, सन्तति प्राप्ति व सुख-दुःख, सन्तति के वैभव गुण, रूप रङ्ग, स्वभाव, उत्कर्ष, आयुष्य, विद्यायोग, यांत्रिक विद्या, शास्त्रों में निपुणता, विद्वत्ता, राजसन्मान, मन्त्रसिद्धि, चतुरता, विचारशक्ति, लेखन शक्ति, ग्रन्थकर्तृत्व शक्ति, अकस्मात् धन लाभ, सट्टाबाजी, लाटरी, चतुर्थ स्थान के सुख का साधन, गर्भ रहना और गिरना, इच्छा आदि ॥ ५ ॥

सौरिभीरिपुसंग्रामगवोष्ट्रक्रूरकर्मणाम् ।
मातुलातङ्कशङ्कानां रिपुस्थानाद्विनिर्णयः ॥ ६ ॥

हि॰ टी॰—भैंस, शत्रुओं से युद्ध, गाय, ऊँट, क्रूर कर्म, मामा, भय, सन्देह, आदि सबों का विचार छठे भाव से करना चाहिए ॥ ६ ॥

रिपुस्थान—(षष्ठ भाव) से रोग, भ्रातृपक्ष का सुख, शारीरिक व प्रापश्चिक पीड़ा, स्वजन विरोध, अपमानकारक प्रसङ्ग, दुष्टकार्य, व्रण, कुष्ठादि का उद्गम, मनस्ताप, शत्रुपीडा, चोरी का भय और उनसे नुकसान आदि ॥ ६ ॥

वाणिज्यं व्यवहारं च विवादं च समं परैः ।
गमागमकलत्राणि पश्येत् प्राज्ञः कलत्रतः ॥ ७ ॥

हि॰ टी॰—वाणिज्य अर्थात् क्रय-विक्रय, व्यवहार अर्थात् व्याजपर द्रव्य लगाना, शत्रुओं के साथ विवाद, गमागम (परदेश जाना और आना), स्त्री इन सबों को विद्वान् जन सप्तमभाव से देख ॥ ७ ॥

जायास्थान—(सप्तम भाव) से--धर्मपत्नी का रूप, रङ्ग, गुण, धर्म, स्वभाव, वृत्ति प्रेम व विचार पद्धति, एकपत्नी व्रत, स्त्री का स्वास्थ्य, भार्यादि सुख, आकस्मिक स्त्री लाभ, व्यभिचार, पर-स्त्री-गमन व रत, व्यापार से लाभ या हानि, भूला हुआ धन लाभ, शत्रु, दीवानी मुकदमे, स्वतन्त्र व्यापार का प्रयत्न, मूत्राशय, अण्डाशय, धात्वाशय आदि ॥७॥

नद्युत्ताराऽध्ववैषम्ये दुर्गे शात्रवसङ्कटे ।
नष्टे दष्टे रणे व्याधौ छिद्रे छिद्रं निरीक्षयेत् ॥ ८ ॥

हि० टी०—नदी पार होने में, मार्ग की विषमता में, दुर्ग किलों का भङ्ग या अपने वश में करने आदि के, शत्रु सम्बन्धी सङ्कट अर्थात् शत्रुओं द्वारा बन्धनादि को प्राप्त करने में और छूटने में, द्रव्यादि के नष्ट अर्थात् चोरी आदि होने में, सर्पादि द्वारा काटे जाने में, युद्ध में, व्याधि में, छिद्र (शाकिनी आदिदोष) में अष्टमभाव से विचार करना चाहिये ।

मृत्युस्थान—(अष्टम भाव) से-लाटरी, लाँच, रिश्वत, आकस्मिक धन लाभ, विवाहित स्त्री सम्बन्धी धन, जमीन का लाभ, मकान, जमीन, गाँव आदि का आकस्मिक लाभ, परस्त्री से आकस्मिक धन लाभ, स्त्री धन लावारिस हक लाभ, स्त्री अधिकारी की नौकरी से लाभ, कौटुम्बिक कलह, मानसिक चिन्ता, सर्पादि से भय, कल्पना, तरङ्ग, आयुष्य, मर्यादा, अपघात, अपमृत्यु, भयङ्कर सङ्कट, मृत्यु सम पीडा, आत्महत्या, शत्रु ज्वरादि रोग, गुह्य भाग के रोग आदि ॥ ८ ॥

वापी-कूप-तडागादि-प्रपा-देवगृहाणि च ।
दीक्षा यात्रा मठं धर्मं धर्मान्निश्चित्य कीर्तयेत् ॥ ९ ॥

हि० टी०--बावली, कुँआ (इनारा), पोखरा पौंसरा आदि के निर्माण, देवताओं के मन्दिर आदि बनाने में, मन्त्रग्रहण अर्थात् उसका नियमपूर्ण होने आदि का, तीर्थयात्रा (होगा या नहीं), मठ (अर्थात् धर्मशाला, गोशाला, पाठशाला) आदि धर्म सम्बन्धी कार्य इन सबों को नवमभाव से निश्चय करके कहे। विशेष नवमभाव से गमनागमन और राज्य लाभ का विचार भी किया जाता है ॥ ९ ॥

धर्मस्थान--(नवम भाव) से भाग्योदय, समुद्र पर्यटन, परदेश-गमन, परदेश वास, पूर्व जन्म कर्मफल, वैदिक सामर्थ्य, धर्मश्रद्धा, धर्माचरण, ईश्वरभक्ति, गुरु उपदेश, पुण्यकर्म, मन्त्रसिद्धि, तीर्थयात्रा, धार्मिक वृत्ति, तप, सामर्थ्य, दातृत्व, औदार्य, सुख सम्पन्न स्थिति, बड़े भाई आदि का सुख आदि ॥ ९ ॥

राज्यं मुद्रां पुण्यं स्थानं पितृप्रयोजनम् ।
वृष्ट्यादिव्योमवृत्तान्तं व्योमस्थानाद्विलोकयेत् ॥१०॥

हि० टी०—राज्य अर्थात् राजाओं की राजगद्दी, राजमुद्रा आदि का निर्माण, पुर (नगर), पुण्यकार्य, निवास स्थान, पितृसम्बन्धी कार्य, वर्षा आदि, आकाश सम्बन्धी वृत्तान्त इन सबों को दशम स्थान से विचार करना चाहिये ॥१०॥

कर्मस्थान-(दशम भाव) से पिता का स्वभाव, गुण, रूप-रङ्ग आयुष्य, उत्कर्ष, राजानुकूलता, श्रेष्ठ अधिकार की प्राप्ति, सत्ताधिकारी, उपजीविका का साधन, राज्यमान्यता, नौकर, राजा से सन्मान और पदवी, व्यापार, उद्योग धन्धा, प्रवास, आकांक्षा वृत्तान्त का ज्ञान, लोगों पर छाप, कीर्ति, राज्य प्राप्ति, महत्त्व के कार्य में यशापयश, ऐश्वर्य, काल आदि ॥१०॥

गजाश्वयानवस्त्राणि शस्यकाञ्चनकन्यकाः ।
विद्वान् विद्यार्थयोर्लाभं लक्षयेल्लाभलग्नतः ॥११॥

हि० टी०--हाथी घोड़ा पालकी आदि का लाभ, वस्त्र, धान्य, सोना, कन्या, विद्या और धन का लाभ इन सबों को विद्वान् ग्यारहवें स्थान से विचारें ॥११॥

लाभ स्थान—(एकादश भाव) से मित्र सुख, बड़े भाई का सुख, इच्छा, महत्त्वाकांक्षा, साम्पत्तिक स्थिति, राजा आप्तवर्ग स्त्री मित्रादि से धन लाभ, मान, अपमान, वस्त्र, अलङ्कार तथा वाहनादि का लाभ, समाज में श्रेष्ठत्व, कुटुम्बियों का सुख आदि ॥११॥

त्याग-भोग-विवाहेषु दानेष्टकृषिकर्मणि ।
व्ययस्थानेषु सर्वेषु विद्धि विद्वन्! व्ययं व्ययात् ॥१२॥

हि० टी०—हे विद्वन् ! त्याग अर्थात् माङ्गलिक कर्म में इनाम आदि देना, भोग अर्थात् कुटुम्बादिकों के लिये धन का व्यय, विवाह, दान, वाञ्छित कार्य की सिद्धि, खेती कर्म और अन्य भी खर्च करने के कामों में बारहवें भाव से व्यय (खर्च) को जानो ॥१२॥

व्यय स्थान—(बारहवें भाव) से शारीरिक आपत्ति, सत्यासत्य कर्मों में धन का व्यय, शत्रु से हानि, ऋणग्रस्त स्थिति, अनिवार्य क्लेश, राजविरोध, राजदण्ड, कैद, जुर्माना, अधिकार भ्रष्टता, रोगोद्भव, दुष्टों की सङ्गति, विश्वासघात से हानि, गुप्तशत्रु, अपघात, कलह, ऐश्वर्यनाश, द्रव्यनाश, चोरों से द्रव्यहानि, लोक और समाज में अपमान, मुकदमे में अपयश, मित्र के कारण द्रव्यनाश, अनेक प्रकार से दुःख और धनका व्यय, पाँव और नेत्र में पीडा आदि ॥ १२ ॥

भाव ज्ञान

१ भाव शरीर-मस्तिष्क	५ बुद्धि-विद्या-सन्तति	९ धर्म भाग्य
२ धन संचय-कुटुम्ब सुख	६ मातृपक्ष-रिपु-रोग	१० उपजीविका पिता राजाश्रयकर्म
३ भाई बहिन, भाई-पराक्रम	७ भार्या भागीदार प्रापञ्चिक सुख	११ लाभ मित्र लाभ
४ माता वाहन-नौकरादि सुख	८ आयु-मृत्यु-स्त्री धन लाभ	१२ व्यय-दुर्भाग्य खर्च

शारीरिक भाग

१ मस्तक	५ पेट पीठ	९ पेट पीठ
२ दाहिनी आँख	६ अँतड़ी-नाभि पाँव	१० छाती-हृदय
३ गला कान हाथ	७ कमर मूत्राशय	११ गला कान हाथ
४ हृदय-छाती	८ इन्द्रिय पाँव	१२ बायीं आँख

सम्बन्धियों का ज्ञान

१ आजा	५ सन्तति	९ ४ था भाई साला बहनोई
२ पितृपक्ष	६ मातृपक्ष-काकी	१० पिता सास
३ भाई-बहिन नौकर	७ आजी भार्या ३रा भाई बहिन	११ जामाता बहु-मित्र
४ माता श्वसुर	८ भार्या पक्ष कुटुम्ब स्थान	१२ काका मामी

यो यो भावःस्वामिदृष्टोयुतोवा, सौम्यैर्वा स्यात्तस्यतस्याऽस्तिवृद्धिः।
पापैरेवं तस्य भावस्य हानि, निर्दिष्टव्या प्रश्नतो जन्मतो वा ॥१३॥

स्पष्टार्थ।

[अथ भावस्थितग्रहफल--]

१ तनुभाव--शुभग्रह-शरीरसुख, आरोग्य, ऐश्वर्य, मानसिकशक्ति, ऊँचाई , मितभाषी, रोगीका नाश, भाग्यवृद्धि, तीव्रबुद्धि, शान्तस्वभाव, सुख और वैभव भोगने वाला। पापग्रह--शारीरिक पीडा, रोगयुक्त, आलसी, दुर्बुद्धि, दुर्गुणी, गर्विष्ठ, दुःखदायी।

२ धनभाव—शुभग्रह-श्रीमानकुल में जन्म, बड़ा कुटुम्बी, आप्तवर्गों पर प्रेंम दृष्टि रखनेवाला, वक्ता, भाग्यशाली, द्रव्य सञ्चय करनेवाला।

पापग्रह--द्रव्य की अड़चन, आप्तवर्ग से विरोध, आपत्ति, कपटी, मिथ्याभाषी, दृष्टि विकार, नेत्रपीड़ा, अकारण द्रव्यनाश, खर्च, बोलने में दोष ।

३ सहज भाव--शुभग्रह--पराक्रमी, साहसी, कार्य में यश, उद्योग धन्धे में यशलाभ, विद्या की रुचि, उत्तम हस्ताक्षर, भाई बहिन का सुख, प्रवास में सुख और लाभ, मिष्ठान्नप्रिय, धर्म पर श्रद्धा, शत्रुओं का नाश करने वाला । पाप ग्रह--कार्य में बाधा, प्रवास में क्लेश, कलह, तामसी, मित्र और बन्धु-बान्धवों से हानि तथा विरोध अनबन, साधारण हस्ताक्षर, भाई बहिन के सुख की हानि ।

४ सुखभाव--शुभग्रह-स्थावर सम्पत्ति की प्राप्ति, गाँव, घर, जमीन, बगीचा, वाहन आदि का सुख, ऐश्वर्य, आराम, दिलदार, सन्तोषी मन, स्थिति, दयालु, कीर्ति, यश, धन, और सुख, कुलाभिमानी, सुखभावी, मातृसुख, नौकर सुख, प्रतिपालक । पापग्रह--सुखहीन, अस्वस्थ मन, निरन्तर क्लेश, मनका कपटी, स्वार्थी, दूसरों के उत्कर्ष में दुःख, बड़े कष्ट से इष्टकार्य की सिद्धि, वाहन से अपघात, स्थावर सम्पत्ति लाभ परन्तु कम सुख, स्वजन आप्त वर्ग से विरोध, मातृ सुखहीन, संशयी, चञ्चल स्वभाव, नौकर सुख नाश और त्रास ।

५ सुतभाव--शुभग्रह-बुद्धिमान्, चतुर, विद्यामें निपुण, राजदरबार में मान्यता, तीक्ष्ण बुद्धि और गहन विषयों को सुलभ सुगम करने में प्रवीण, श्रेष्ठ अधिकार, कीर्तिवान्, कुलदीपक, सन्तति का सुख, वाञ्छित मानसिक पूर्ण हो तथा द्रव्य लाभ । पापग्रह—विद्या में अपयश, वृथाभिमानी, गर्भस्राव तथा सन्ततिनाश, दुःख, अविचारी सन्तति, चिन्ताग्रस्त, बुद्धिभ्रष्ट, चञ्चलवृत्ति ।

६ रिपुभाव--शुभग्रह लोगों की प्रतिकूलता, स्वजनों से विरोध, त्रास, आसक्त, प्रकृति, शत्रुओं से त्रास और विशेष हानि, उदार दिल, परोपकारी, लोकोपयोगी, कार्य की उत्कण्ठा, कार्यकुशल, लोगों को अनुकूल करने में प्रवीण, मातुल पक्ष का सुख। पापग्रह—शरीर स्वास्थ्य उत्तम, निश्चयी, तामसी, साहसी, उग्र स्वभाव, शत्रुओं का पराभव,

रोगों का नाश, गुप्त शत्रुओं से त्रास, कठिन प्रसङ्ग का सामना करने वाला लेकिन परम स्वार्थी, मातृपक्ष सुख का नाश करने वाला।

७ जायाभाव—शुभग्रह–वैवाहिक स्त्री सुख, संसारदक्ष पतिव्रता स्त्री का सुख, गुणवान्, रूपवान्, सुन्दर और सुस्वरूप भार्या, उच्चकुल की स्त्री से विवाह, व्यापार में भागीदार से लाभ, दीवानी मामलों में यशलाभ, देनलेन के धन्धे में लाभ, क्रय-विक्रय में कुशल, वाद-विवाद में प्रवीण, विजय लाभ, प्रवास में सुख, पापग्रह स्त्री सुख रहित, स्त्री सम्बन्धि कलह, त्रास स्त्री का स्वभाव, उग्रचण्डी रूपा, मानी, संसार सुख के विषय में चिन्ता, प्रवास में कष्ट, व्यभिचारी, पर-स्त्री-गमन करने वाला, अदालती मामलों में अपयश उठाने वाला, द्रव्य हानि, स्वतन्त्र व्यापार में नुकसान, बहुभार्या योग, स्त्री को अरिष्ट, अन्त में पश्चात्ताप और दुःख।

८ मृत्युभाव—शुभग्रह—विवाह के पश्चात् स्त्री की तरफ से स्थावर इस्टेट (जमीन मकान धन) लाभ, वारिस के नाते द्रव्य प्राप्ति, ट्रस्टी, स्त्री इस्टेटपर अधिकारी के नाते द्रव्य लाभ, श्वसुर की साम्पत्तिक स्थिति उत्तम, शरीर प्रकृति साधारण, स्त्री धन लाभ, आकस्मिक धन लाभ। पापग्रह--बुरे कर्मों से धन लाभ, परद्रव्यापहारी, कौटुम्बिक और राजकीय सङ्कट, दारुण प्रसङ्ग, उद्योग कार्य में हानि, गृहकलह, लोगों से वैमनस्य, मानहानि, अपकीर्ति, ऋण बाजारी, व्यसनाधीन।

९ भाग्यभाव—शुभग्रह–अनुकूल दैव, भाग्य और ऐश्वर्य की प्राप्ति, दूर का प्रवास और लाभ, नाना प्रकार के सुख, धर्म पर श्रद्धा, पुण्यकर्म करनेवाला, कीर्तिमान्, कुटुम्ब के बड़े लोगों का सुख, स्वदेश में भाग्योदय। पापग्रह—परदेश में भाग्योदय, सदा हर कार्यों में अड़चन, परिस्थिति में बार-बार फेर बदल, भाई से विरोध तथा पृथक् दाय, मन को सन्ताप, ऐश्वर्य प्रतिकूल।

१० कर्मभाव—शुभग्रह–सत्कर्मी, नौकरी और उद्योग कार्यमें अधिकार लाभ, मानसन्मान, राजाश्रय, पदवीदान, महत्वपूर्ण कार्य में यश-

लाभ, साधारण समाज तथा राजसमाज में सन्मान, श्रेष्ठ साम्पत्तिक स्थिति, समाज कार्य का नेता, ऐश्वर्य, स्वपराक्रम से धन लाभ। पापग्रह—पितृ सुख का नाश, कार्य में अपयश, श्रेष्ठ अधिकारियों का विरोध, हमेशा कार्य में फेर बदल, अपकीर्ति, उपजीविका साधन के सम्बन्ध से हमेशा चिन्ता, अकस्मात् नुकसानी के प्रसङ्ग, समाज विरोधी, राजा से दूषण, उच्चस्थिति से नीच स्थिति को प्राप्त होना।

११ लाभभाव—शुभग्रह-श्रेष्ठ अधिकार, उद्योग धन्धा और नौकरी से सुख, साम्पत्तिक योग प्रबल, राजा लोगों से मैत्री और धनलाभ आप्तवर्ग, बड़े भाई मित्र, नौकर का सुख, साहसी, धैर्यवान्, निश्चयी, काम में यश प्राप्त करने वाला, अनेक प्रकार से तथा सम्बन्धियों से द्रव्य प्राप्ति। पापग्रह-पाप-पुण्य की परवाह न कर द्रव्य प्राप्ति में प्रवीण, दूसरों पर छाप रखनेवाला, अधिकारी अनुकूल, नौकर का त्रास, बड़े भाई को अनिष्ट, कलह, कौटुम्बिक और मित्र सुख की कमी, सामान्यभाग्य।

१२ व्ययस्थान—शुभग्रह--शुभ कार्य में द्रव्य का खर्च, ग्रन्थों का वाचन और चिन्तन, शत्रु पीड़ा, सङ्कट का निवारण, अधिकार में विघ्न, धन की कमी, मानसिक तथा शारीरिक स्थिति असन्तोषजनक परन्तु अन्त में यश प्राप्ति और पूर्ववत् स्थिति की प्राप्ति। पापग्रह--द्रव्य सम्बन्धी चिन्ता, द्रव्य की हानि, उद्योग धन्धे में अपयश, बुरे कर्मों में धन का व्यय, धन का फजूल खर्च, अधिकार और मान्यता में कमीपना, अपमान, अपकीर्ति, ऋणग्रस्त स्थिति, शरीर की पीड़ा, बीमारी, श्रेष्ठ अधिकारी प्रतिकूल, अनेक सङ्कट, ग्रह निर्बल हो तो वृथापवाद, शत्रु से हानि, राजदण्ड, कैद, कार्य में अपयश, अविचारी स्त्री आदि।

शुभग्रह तथा पापग्रह--अपनी दशा अन्तर्दशा में उपरोक्त फलों को प्रायः विशेषरूप से देते हैं। ग्रहगोचर में भी जन्मराशि से तथा नाम राशि से प्रथमादि स्थानों में स्थिर होनेपर पूर्वोक्तवत् फल देते हैं। सामान्यरूप से बलीग्रह--सुभग्रह केन्द्र अथवा त्रिकोण में हो तो वे बलवान्

समझे जाते हैं। कोई भी ग्रह ३-११ भाव में बलवान् समझे जाते हैं। परन्तु सौम्य ग्रह से क्रूर ग्रह पराक्रम करने के लिये अधिक योग्य समझे जाने के कारण वे इन स्थानों में अधिक बलवान् समझे जाते हैं। शुभग्रह का धन स्थान में रहना अधिक लाभदायक समझा जाता है क्योंकि वे वहाँ बलवान् रहते हैं। शुभ ग्रह से पाप ग्रह युक्त अथवा दृष्ट हो तो वे बलवान् कहलाते हैं।

पापग्रह यदि--५-९ त्रिकोणभाव में स्थित हों तो मध्यमबली समझें जाते हैं। निर्बली- शुक्र के सिवाय कोई भी ग्रह यदि ६.८.१२ भाव में स्थित हों तो वे निर्बली कहलाते हैं। कोई भी ग्रह यदि शत्रु ग्रह से तथा रवि से युक्त हो तो वे निर्बली कहलाते हैं, यह सामान्य रूप से लिखा है।

[सट्टाबाजी तथा लाटरी से धनलाभ]

जन्मकुण्डली में (१) बु० शु० र० मं० बलवान होना चाहिये। (२) लग्न या राशि से रवि ३-६-११ भाव में हो तो रस से फायदा होगा परन्तु इन भावों पर शुभ ग्रहों की दृष्टि होना आवश्यक है। (३) जन्मलग्न या राशि से रवि २.५.१० भाव में होकर लग्नेश या चन्द्र से युक्त हो और इन पर अशुभ ग्रहों की दृष्टि न हो तो विशेष लाभ होगा। (४) र० मं० बु० शु० ये ग्रह अपने या उच्च राशि में होकर २.४.५.९.१०.११ स्थान में हो तो सट्टा से निरन्तर लाभ होगा। और इन भावों में यदि चं० मं०, र० चं०, र० बु०, र० शु०, र० मं०, मं० बु०, मं० शु०, लग्नेश से युक्त व दृष्ट हों तो और शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो विशेष लाभ होगा।

[वैराग्य योग]

(१) चतुर्थभाव में बुध और दशम भाव में शनि हो तो मनुष्य विरक्त स्वभाव का होगा। (२) दशमेश शनि से युक्त होकर दशम-भाव में ही हो तो विरक्त स्वभाव का होगा। (३) दशमभाव में चं० बु० हो उस पर शनि की दृष्टि हो तो विरक्त स्वभाव होगा। (४) १.९.११ राशि का केतु व्यय भाव में हो तो विरक्त स्वभाव का होगा।

वेदान्त विद्यायोग—केन्द्र या त्रिकोण में यदि गुरु स्थित हो तो मनुष्य वेदान्तविषय प्रिय होगा ।

[ब्रह्मज्ञान योग तथा बन्धनयोग]

स्वगृह या उच्च राशि का गुरु यदि १-६-८-१०-११-१२ भाव में हो तो मनुष्य ब्रह्मज्ञानी होगा । (१)-२-५-६-१२ भाव में पापग्रह हो या पापग्रह की दृष्टि हो तो बन्धन व जुर्माना योग समझना । किन्तु इन भावों पर यदि गुरु की दृष्टि हो तो सब दुःखों का नाश होगा ।

व्यभिचार योग--(१) सप्तम भाव में मङ्गल हो और उस पर पापग्रह की दृष्टि हो । (२) शुक्र मङ्गल से युक्त अथवा दृष्ट हो । (३) सप्तमभाव में शुक्र हो और शनि से दृष्ट हो । (४) सप्तम भाव में श० मं० रा० स्व० वा उच्च राशि के हो । (५) १-२-५-६-७ भाव के स्वामी शुक्र या पापग्रह से युक्त हो । (६) लग्नेश व षष्ठेश शनि मङ्गल से युक्त हो तो पर स्त्री रत । (७) २-७-१० भाव के स्वामी चतुर्थ भाव में हो तो परस्त्री वेश्यागमन । (८) चन्द्र पापग्रह से सप्तमभाव में युक्त अथवा दृष्ट हो तो परस्त्रीगमन । (९) सप्तमेश मं० से युक्त व दृष्ट हो तो परस्त्रीगामी होगा । (१०) सप्तमेश पुरुष ग्रह होकर पापग्रह से युक्त व दृष्ट हो तो परस्त्री रतयोग होगा । कुण्डली में तथा इन लग्नों से भी ज्ञान करना चाहिए । पूर्वोक्तयोग स्त्री की कुण्डली में होने से परपुरुष गामिनी होती है ।

[अथ सन्तानभावविचारमाह—]

नन्दनाधिपतिना युतेक्षिते नन्दनं शुभनभोगसंयुतम् ।
नन्दनागमनमेव सत्वरं व्यत्ययेन न हि नन्दनागमः ॥ १ ॥
अङ्गाधिपे लग्नगते तृतीये धनालये वा प्रथमं सुतः स्यात् ।
सुखं यदा लग्नपतौ नरस्य कन्या सुतो वेति सुतश्च कन्या ॥ २ ॥
यावन्मितानामिह पुत्रभावे नरग्रहाणामिह दृष्टयः स्युः ।
तावन्त एवास्य भवन्ति पुत्राः कन्यामितिः स्त्रीग्रहदृष्टितुल्या ॥३॥

सहजभावपतिसहजे यदा तनुगतो धनगो व्ययगोऽपि वा।
सुतगतः सुतहानिकरो नृणां बुधवरैरुदितो मिहिरादिभिः ॥ ४ ॥
शुक्रागारनिशाकराद्वितनुगाः सन्तानसौख्यं नृणा-
मादो सञ्जनयन्ति जन्मसमये चापं विना प्रायशः।
मीने वा धनुषि प्रमाणपटवः सन्तानभावे यदा
सन्तानं न तदामनन्ति विबुधाः पुंसां विशेषादिह ॥५॥
अर्के कर्कगते हरौ भृगुसुते मन्दे तुलायामजे,
चन्द्रे यस्य नरस्य जन्मसमये वीर्यच्युतोऽसौ भवेत्।
लग्ने चन्द्रयुते गुरौ रविसुते पुत्रेऽपि वीर्यच्युतो,
जीवेऽङ्गे स रवौ मृतावपि कुजे क्लीबर्क्षगे कष्टके ॥६॥
कन्याराशिगते लग्ने बुधमन्दावलोकिते।
शनिक्षेत्रगते शुक्रे वीर्यहीनो नरो भवेत् ॥७।
नीचे गुरौ भृगौ वाऽपि समे ज्ञे विषमे रवौ।
तदा पुत्रसुखं न स्यादित्युक्तं गणकोत्तमैः ॥८॥
कर्कटे तु कलानाथे पापयुक्तेक्षिते यदा।
मन्ददृष्टे दिवानाथे पुत्रः षष्टिमितेऽब्दके ॥९॥
पापभे पापसंयुक्ते जन्मलग्ने खाबलौ।
युग्मभे वसुधापुत्रे खगुणाऽब्दात् परं सुतः ॥१०॥
मन्दालयेऽर्के खलदृष्टियुक्ते लग्नेऽपि वा पापखगस्य वर्गे।
अपत्यहानिः कुलदेवकापात् पुरातनैरङ्गभृतां निरुक्ता ॥११॥
अपत्यभावे यदि मंगलः स्यादपत्यराशिं विनिहन्ति सद्यः।
अस्तांशके पापयुते सुतेशे तदा न सन्तानसुखं वदन्ति ॥१२॥

गुरौ सुतागारपतिः स-पापो बलेन हीनो मनुजो विपुत्रः ।
अरावपापे निधने तदीशः सुतेन हीनो मनुजस्तदानीम् ॥१३॥
तथैव भानुः खलु पञ्चमस्थो जातं च जातं विनिहन्ति बालम् ।
लग्नेश्वरः पापयुतः सुतेशो व्ययाऽष्टमे पुत्रसुखेन हीनः ॥१४॥
यदागुरुसूर्यारशनैश्चराणां दोषो यदा जन्मनि मानवानाम् ।
वंशेशकोपेन सुतस्य नाशं तदा वदन्तीति पुराणविज्ञाः ॥१५॥

[सुत भाव]

(१) पञ्चमेश चतुर्थस्थान में हों तो प्रथम कन्या होगी ।

(२) लग्न या धनभाव में चं० मं० शु० एकत्र अथवा पृथक् हों तो प्रथम पुत्र होगा ।

(३) पञ्चम भाव पर जितने शुभग्रह की दृष्टि हो या राशि का जो अंक हो उससे सन्तति की संख्या दुगुनी या उतनी ही होगी । पुरुष ग्रह की दृष्टि हो तो पुत्र, व स्त्री ग्रह की दृष्टि हो तो कन्या की संख्या का विचार करना चाहिए ।

(४) इस भाव में कुम्भ का शनि यदि गुरु से दृष्टि हो तो पाँच पुत्र और मकर का मङ्गल हो तो कन्या सन्तति होगी ।

(५) स्वगृह का गुरु हो तो पाँच पुत्र होंगे ।

(६) शनि केन्द्र में या त्रिकोण में होकर शुभग्रह से दृष्टि हो किंवा लाभ भाव में हो तो मनुष्य कानून (विधि) प्रिय या वकील होगा ।

(७) ८-१० राशि का शनि केन्द्र या १-२-३-९-११ भाव में हो, या स्वराशि का हो, या नवम भाव में गु० चं० परस्पर दृष्ट हों तो मनुष्य वकील होगा ।

(८) शु० बु० २-५-६-११ भाव में हों तो मनुष्य वेदान्ती होगा ।

(९) ५-११ भाव में बहुत ग्रह हों तो मनुष्य विद्वान् व कारस्थानी होगा ।

(१०)बु० मं० परस्पर सातवें भाव में हों तो मनुष्य इञ्जीनियर होगा।
(११) २-३ भाव में बु० र० चं० हों तो गणितज्ञ होगा।
(१२) लग्नभाव या मिथुनराशि में शुक्र हों तो शास्त्री होगा।
(१३) पञ्चमभाव में पापग्रह युत हों या उसको देखते हों तो कई गर्भपात करते हैं, उत्पन्न करके भी नष्ट करते हैं।
(१४) पञ्चमेश सूर्य के साथ अस्त हो तो सन्तान जीवित नहीं रहती।

[अथ पुत्रार्थमुपायमाह]

हरिवंशो रविणा शशी त्रिपुरहा भौमे च रुद्री क्रिया।
सौम्ये सम्पुटकांस्यपात्रविधिवज्जीवे च पैत्र्या तिथिः ॥१॥
शुक्रे गोप्रतिपालनं च कथितं मन्दे च मृत्युञ्जयः।
कन्यादानभुजङ्गकेतुकपिलासन्तानसौख्यप्रदा ॥२॥
बुधशुक्रकृते दोषे सुताप्तिः शिवपूजनात्।
गुरुचन्द्रकृते दोषे यन्त्रमन्त्रौषधीबलात् ॥३॥
सर्वदोषविनाशाय सन्तानहरिपूजनम्।
कुर्याद्भौमव्रतं चापि कामदेवव्रतं नरः ॥४॥
देवकीसुत! गोविन्द! वासुदेव! जगत्पते!।
देहि मे तनयं कृष्ण! त्वामहं शरणं गतः ॥५॥
[वा] सन्तानसुन्दरीदेव्याः आराधनं कुरु।

[७—जायाभाव]

(१) सप्तमेश उच्च राशि में शुभग्रह से युत या दृष्ट अथवा इस भाव में शुभ ग्रह हो तो आज्ञाकारी और धर्माभिमानी भार्या मिलेगी।
(२) सप्तमेश सू० मं०, चं० शु०, या श० मं० रा० के० से युक्त व दृष्ट हो तो मनुष्य व्यभिचारी हों, विधवा स्त्री से प्रेम और सहवास करेगा।
(३) सप्तम भाव में जो राशि या ग्रह हो अथवा जिस ग्रह की दृष्टि

या युति हो तो उसके अनुसार स्त्री का रूप, रङ्ग, गुण, स्वभाव आदि का निश्चय करना चाहिये। (४) इस भाव में शुक्र यदि मङ्गल, शनि, राहु ये तीनों या एक ग्रह से युक्त और दृष्ट हो तो मनुष्य व्यभिचारी होगा। (५) इस भाव में शुक्र यदि उच्च राशि का हो अथवा पापग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो उच्च कुल की स्त्री से, स्वगृह का हो और पापग्रह से दृष्ट हो तो स्वजाति की स्त्री से, शत्रुक्षेत्र या नीच राशि के पापग्रह से दृष्ट हो तो नीच जाति की स्त्री से व्यभिचार करेगा व रमण करेगा। (६) इस भाव में कर्क का चन्द्रमा हो और वह शुभग्रह से दृष्ट हो तो सुन्दर, रूपवान्, गौरवर्ण, पतिव्रता स्त्री से विवाह होगा और यदि उच्च का पापग्रह हो तो पति पर उसका अधिकार-प्रभाव रहेगा। (७) सप्तमेश लाभ में हो अथवा इस भाव पर श० मं० चं० शु० स्थित हो तो मनुष्य परस्त्री सङ्ग करेगा। (८) इस भाव में मिथुन का शुक्र हो तो मनुष्य कामी होगा। (९) इस भाव में शुक्र होकर इसके द्वितीय व द्वादश भाव में पापग्रह हो और इस भाव पर पापग्रह की दृष्टि हो तो वह मनुष्य नपुंसक होगा। (१०) मङ्गल की दृष्टि इस भाव पर हो तो भार्या का नाश और द्वितीय विवाह कारक होगा। (११) सप्तमेश वक्री, नीच राशि का, या शत्रु क्षेत्र और अशुभ भाव में हो तो स्त्रीसुख नाश। (१२) सप्तमभाव में रवि पापग्रह से दृष्ट हो तो बन्ध्या स्त्री से, चन्द्र हो तो स्वजाति की स्त्री से, मंगल हो तो रजस्वला स्त्री से, बुध हो तो वैश्य जाति की स्त्री से, गुरु हो तो ब्राह्मण जाति की स्त्री से, श०रा० के० हो तो नीच जाति की स्त्री से मनुष्य रमण करेगा। (१३) इस भावमें श० या मं० अपने राशि का हो, अशुभ ग्रह से दृष्ट व युक्त हो शुभग्रह से दृष्ट न हो तो स्त्री पर-पुरुष-गामिनी होगी। (१४) शुक्र इस भाव में हो व मं०र०श० शुक्र से चतुर्थ सप्तम और अष्टम हो तो स्त्री जल कर मरेगी। (१५) चन्द्र से शनि सप्तमभाव में हो और मंगल से दृष्ट हो तो पुनर्विवाह योग जानना। (१६) सप्तमेश जहाँ हो वहाँ से १-४-७-८-१२ इन भावों में मंगल या पापग्रह हों तो बहुभार्या योग जानना। (१७) इस

भाव पर मङ्गल और गुरु दोनों की दृष्टि हो तो मनुष्य पर-स्त्री सुख से पराङ्मुख होगा। (१८) सप्तमेश उच्च राशिका होकर अपने भाव पर दृष्टि करता हो व इस भाव पर पापग्रहकी दृष्टि हो तो सुन्दर स्त्रियों की प्राप्ति होगी। (१९) सप्तम भाव में २-७ राशिका शुक्र या चन्द्र, शनि से दृष्ट या युक्त हो तो बहु स्त्रीलाभ होगा। (२०) लग्न में कर्क का चन्द्र हो, सप्तम में मङ्गल और नवम में शुक्र हो तो स्त्री पतिव्रता होगी।

[९ नवमभाव—]

(१) भाग्येश भाग्यभाव में होकर यदि शुभग्रह की दृष्टि हो तो मनुष्य भाग्यवान् होगा। (२) भाग्येश गुरु होकर १-३-५ भाव में हो तो मनुष्य भाग्यशाली, सम्पत्तिवान् और विलासी होगा। (३) श० चं० या मं० चं० इस भाव में उच्चराशि का हो तो मनुष्य मन्त्री, सलाहकार होगा और बहुत धन प्राप्त करेगा। (४) नवमेश और धनेश केन्द्र में होकर यदि लग्नेश से दृष्ट हो तो मनुष्य गुणी और सम्पत्तिवान् होगा। (५) नवम भाव में पाँच ग्रह हों तो मनुष्य श्रेष्ठ अधिकार और अपार सम्पत्ति प्राप्त करेगा। (६) इस भाव पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो मनुष्य कीर्तिमान्, सुखी और श्रीमान् होगा। (७) नवमेश दशम भाव में और दशमेश नवमभाव में हो तो पिता को धनवान् और कीर्तिवान् होना चाहिये। (८) भाग्य भाव में पापग्रह हो या उसकी दृष्टि हो तो भाग्योदय में अनेक बाधाएँ आवेंगी। (९) नवमेश ६-८-१२ भाव में हो तो भाग्यहीन जानना और पापग्रह की दृष्टि हो तो अधिक अशुभ फल मिलेगा। (१०) नवमेश केन्द्र में हो और शुभग्रह से दृष्ट हो तो भाग्यवान् होगा। (११) चतुर्थेश नवम भाव में गुरु शुक्र से युक्त दृष्ट हो तो अनेक प्रकार से सम्पत्ति प्राप्त होगी। (१२) नवमेश धनभाव में और धनेश नवमभाव में हो तो ३२ वर्ष के बाद भाग्योदय होगा। (१३) नवमेश से तृतीयेश युक्त हो, नीच राशि या अंश में हो या निर्बली व अस्तङ्गत हो तो राजा भी रङ्क होगा। (१४) रवि यदि कुण्डली में ६-८-१२ में हो, अष्टमेश नवम में हो, और

द्वादशेश लग्न में हो तो बालक के जन्म होने के पूर्व पिता की मृत्यु होना सम्भव है। (१५) नवमेश अष्टमेश शनि हो और शुभग्रह से दृष्ट न हो, रवि अष्टम स्थान में हो तो बालक के जन्म के पहले वर्ष में ही पिता पर अरिष्ट जानना। (१६) नवमेश नवम में और बुध उच्चांश में हो तो ३६ वर्ष से भाग्योदय होगा। (१७) नवमेश लग्न में, लग्नेश नवम में और गुरु सप्तम में हो तो सम्पत्ति और वाहन का लाभ होगा। (१८) नवमेश नवम को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो स्वदेश में भाग्योदय होगा। (१९) नवमभाव में मकर का मङ्गल हो तो मनुष्य धनी, भाग्यवान् होगा। (२०) दशमेश और लग्नेश एकत्र होकर केन्द्र या त्रिकोण में हो तो मनुष्य अपने स्वपराक्रम से द्रव्य प्राप्त कर अनेक प्रकार के सुखों को भोगेगा तथा व्यापार और नौकरी में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त करेगा। (२१) धनेश व्यय भाव में हो तो मनुष्य निर्धन होगा। (२२) व्यय भाव में नीच का पापग्रह हों तो सदैव ऋणग्रस्त हो और आर्थिक कष्ट बारम्बार मिलता रहेगा। (२३) चतुर्थ भाव पर शनि की दृष्टि हो तो बालपन में ही माता की मृत्यु अथवा मातृसुख नाश तथा विमाता माता का योग भी होगा। (२४) तृतीयेश केन्द्र त्रिकोण में हों, शुभग्रह से दृष्ट हो तो मनुष्य पराक्रमी, यशस्वी और बन्धु भगिनी सुख वाला होगा।

[वैधव्य योग]

(१) लग्न या चन्द्र से सप्तम या अष्टम स्थान में मं० श० रा० र० के० सब एकत्र हों वा कोई भी हो। (२) अष्टम या द्वादश भाव में मेष या वृश्चिक राशि का पापग्रह युक्त राहु हो। (३) लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम, द्वादश भाव में मङ्गल हो। (४) लग्न में र० मं० रा० हो। (५) सप्तमेश अष्टम भाव में और अष्टमेश सप्तम भाव में होकर पापग्रह से दृष्ट हो। (६) लग्न या सप्तम में अथवा षष्ठ या अष्टम में चन्द्र हो तो ८ वर्ष के बाद वैधव्य योग। (७) लग्न में शनि, नवम में मङ्गल, पञ्चम में सूर्य हो तो वह विषकन्या होगी। (८) शनिवार,

द्वितीया, आश्लेषा, मङ्गलवार, सप्तमी, शततारका, इस योग में जन्म हो तो ‡ विष कन्या होगी।

[ग्रहों का स्वरूप, आकार, प्रकृति—]

रक्तवर्णः कुजः प्रोक्तो धिषणः कनकद्युतिः।
शुकपिच्छसमः सौम्यो गौरकान्तिरथोष्णगुः॥ १॥
मन्दारार्कस्य पुष्पेण समद्युतिरनुष्णगुः।
कविरत्यन्तधवलः फणी कृष्णः शनिस्तथा॥ २॥

हिन्दी टीका—अब स्वरूप जानने के लिए ग्रहों का स्वरूप कहते हैं—मङ्गल का रक्त वर्ण, गुरु का सुवर्ण के सदृश वर्ण, बुध का शुक पक्षी के पक्ष सम नील वर्ण, सूर्य गौर कान्ति, चन्द्रमा की पारिजात के सदृश या आँक के फूल सदृश कान्ति, शुक्र का अति शुक्लवर्ण, राहु और शनि कृष्णवर्ण कहे गये हैं अर्थात् जो ग्रह बली होकर लग्न को देखे या लग्न में हो उसका वर्ण उस मनुष्य का कहना॥ १-२॥

स्थूल इन्दुः सितः षण्ढश्चतुरस्रौ कुजोष्णगू।
वर्तुलौ सौम्य-धिषणौ दीर्घौ शनिभुजङ्गमौ॥ १॥

हिन्दी टीका—उस मनुष्य का आकार जानने के लिए ग्रहों का आकार कहते हैं। चन्द्रमा मोटे शरीर वाले हैं, शुक्र षण्ढ (निर्वीर्य) अर्थात् दुर्बल देह वाले हैं, मङ्गल और रवि समान शरीर वाले हैं, बुध और गुरु वर्तुल (गोलाकार) शरीर वाले हैं, शनि और राहु, केतु दीर्घ (लम्बा) आकार वाले हैं। इसमें जो ग्रह सर्वाधिक बली होकर लग्न को देखे या लग्न में स्थित हो उसी ग्रह का आकार उस मनुष्य का कहना॥ १॥

पित्तं प्रभाकर-क्ष्माजौ श्लेष्मा भार्गव-शीतगू।
ज्ञ-गुरू समधातुं च पवनौ राहु-मन्दगौ॥ १॥

‡ विशेष के लिए स्त्रीजातक देखिए।

हिन्दी टीका—अब रोगादि जन्मपत्र द्वारा मनुष्यों की प्रकृति जानने के लिये ग्रहों की प्रकृति कहते हैं। सूर्य और मंगल पित्त प्रकृति वाले हैं, शुक्र और चन्द्रमा कफ प्रकृति वाले हैं, बुध और गुरुसम धातु वाले हैं अर्थात् पित्त, कफ और वायु से तीनों सम हैं, राहु केतु और शनि वातप्रकृति वाले हैं, इसका तात्पर्य यह है कि जन्मपत्र में जो ग्रह बलवान् होकर लग्न को देखे या युक्त हो तो उस ग्रहकी प्रकृति उस मनुष्य को कहना तथा अरिष्टद जो ग्रह हो उनकी दशा अन्तर दशा में उस ग्रह की प्रकृति विकार-जन्य बीमारी कहना चाहिये।

रवि—शरीर के हृदय का भाग, मस्तक या मुख के पास दुःख, खूनका बहाव, नेत्र-दुःख, दृष्टि दोष, जीवनशक्ति की स्थिति, हृदय रोग, उष्णवात, बुखार, पित्त, मूर्च्छा, चक्कर, पीठ या पैरों में दर्द व व्यंग। चन्द्र—पेट के विकार, छाती का विकार, जलोदर, शीतज्वर, स्त्रियों के रोग, प्रदर का बीमारी, आर्तव दोष, अपस्मार, मिर्गी, सहनशक्ति। मङ्गल—रक्तनाश, माता की बिमारी, खसरा (खुजली), सूजन, प्लेग, ज्वर, नासारोग, गुह्यरोग, आपरेशन, चीर-फाड़, घाव इत्यादि। बुध—मेदा सम्बन्धि विकार, गर्दन या गला का रोग, कण्ठमाला, मज्जा, तन्तु की दुर्व्यवस्था, वाणी में दोष, शिरका घूमना, मानसिक व्यथा आदि। गुरु—लीवर की बीमारी, शरीर में रक्त सञ्चय, लकवा का भय, दन्तरोग, प्रतिबन्धक रोग, फोड़े आदि। शुक्र—मधुमेह आदि। शनि—अर्धाङ्गवायु, खाँसी, सन्धिवात, क्षयरोग, शीतरोग, पीड़ा, बद्धकोष्ठ, दमा, दाद का दर्द, अपचन, वातविकार, दीर्घकाल के रोग, आदि। राहु-केतु-शनिवत्—कुछ कम अधिक कष्टदायक हैं।

[अथ दरिद्रयोगाः]

त्रिकोणपतिसम्बन्धी यो यो वित्तप्रदो ग्रहः।
सषडष्टव्ययाधीशैर्युतो धनविनाशकः॥ १॥

रिपुभावपतौ लग्ने लग्नेशो रिपुभावगे ।
मारकस्वामिना दृष्टे युते वा निधनो भवेत् ॥ २ ॥
चन्द्रादित्यौ यदा लग्ने वांगपे निधनालये ।
मारकेण युते दृष्टे नरो भवति निर्धनः ॥ ३ ॥
यदाऽङ्गनाथस्त्रिकभावनाथैर्युतेक्षितः पापयुतोऽथवा स्यात् ।
पुत्रेश्वरेणापि युते विलग्ने शुभैरदृष्टे च भवेदृणी सः ॥ ४ ॥
अस्तारिनीचत्रिकभावगे वा लग्नेश्वरे मारकनाथयुक्ते ।
भाग्याधिपे वाऽथ शुभैरदृष्टे भवेदृणीशो मनुजेश्वरोऽपि ॥ ५ ॥

[अथ धनिकयोगाः]

पञ्चमे निशभे शुक्रे लाभे रविसुते यदा ।
भोक्ता मणिसुवर्णानामधिपो जायते नृणाम् ॥ १ ॥
कर्कटे तु कलानाथे पञ्चमे लाभगे शनौ ।
नानाधनसमृद्धिः स्याद्धर्मवृद्धिश्च भूपता ॥ २ ॥
पञ्चमे तु मृगे कुम्भे स-मन्दे यस्य जन्मनि ।
बुधे लाभालये तस्य सर्वतो द्रविणोन्नतिः । ३ ॥
पञ्चमे तु रवौ सिंहे लाभे देवगुरौ सदा ।
वाहन-स्वर्ण-रत्नानामविजायेत तत्क्षणात् ॥ ४ ॥
पञ्चमे तु गुरुक्षेत्रे स गुरौ यदि जन्मनि ।
लाभगाविन्दुभूपुत्रौ पृथ्वीपतिसमो नरः ॥ ५ ॥
रविक्षेत्रे गते लग्ने रविणा संयुते सति ।
गुरुभौमयुते वाऽपि धनाधिक्यं दिने दिने ॥ ६ ॥

कर्कभे जन्मलग्ने तु स चन्द्रे यदि जन्मनि।
संयुते जीव-भौमाभ्यां स सद्यो वित्तपो भवेत् ॥ ७ ॥
कुजक्षेत्रगते लग्ने स-भौमे यस्य जन्मनि।
ज्ञ-शुक्र-मन्दसंयुक्ते स धनेशसमो नरः ॥ ८ ॥
गुरुभे गुरुसंयुक्ते जन्मलग्नगते सति।
चन्द्राङ्गारयुतो यस्य तस्य लक्ष्मीरचञ्चला ॥ ९ ॥
कन्यामिथुनयोर्लग्ने स-बुधे यस्य जन्मनि।
संयुते शुक्रमन्दाभ्यां वृषे वा धनिको भवेत् ॥१०॥
शुक्रराशिगते लग्ने स-सिते यदि जन्मनि।
चन्द्रजादित्यजाभ्यां तु युते दृष्टे धनाधिपः ॥११॥
लग्नाद् पञ्चमस्थाने यदा सूर्य-बृहस्पती।
तदा विद्याधनैः पूर्णो जायते जातकोत्तमः ॥१२॥
एकोऽपि यदि केन्द्रस्थो बुधो जीवो बलिर्भृगुः।
जायते तत्र यदा बालो तदा स वेदपारगः ॥१३॥
द्वित्रिसौम्या खगा नीचा व्ययभावेऽथवा पुनः।
भवन्ति धनिनः षष्ठे निर्धने चैव भिक्षुकाः ॥१४॥

[अथ मृतजीवितजन्मपत्रज्ञानम्—]

जन्मलग्न, प्रश्नलग्न, अष्टमलग्न तीनों को मिला कर जन्म लग्न से अष्टमेश जिस राशि पर बैठा हो उसकी राशि-संख्या से गुणा करे। गुणनफल में जन्म लग्न और अष्टम लग्न, इन दोनों की संख्याओं को जोड़कर दो का भाग देने से विषमाङ्क शेष बचे तो जीवित तथा समाङ्क शेष के बचने से मृतक की कुण्डली जानना। परन्तु यथार्थ में जन्मलग्न से अष्टमेश जिस राशि पर हो उन राशियों का योग करे

तथा दो का भाग देने से विषमांक शेष में जीवित तथा समाङ्क में मृतक की कुण्डली जानना।

[अथ ग्रहाणां दीप्तादि-अवस्था, तत्फलञ्च—]

दीप्तः स्वस्थः प्रमुदितः शान्तो दीनोऽतिदुःखितः।
विकलश्च खलः कोपी नवधा खेचरो भवेत्॥ १॥
उच्चस्थः खेचरो दीप्तः स्वस्थः स्वर्क्षेऽधिमित्रभे।
मुदितो मित्रभे शान्ते समभे दीन उच्यते॥ २॥
शत्रुभे दुःखितोऽतीव विकलः पापसंयुतः।
खलः खलगृहे ज्ञेयः कोपी स्यादर्कसंयुतः॥ ३॥
पृथक् पृथक् फलं तेषां दशापाके विशेषतः।
उत्तमाद्यनुरोधेन फलं पाके वदन्ति हि॥ ४॥

पाके प्रदीप्तस्य धराधिपत्यमुत्साहशौर्ये धनवाहने च।
स्त्रीपुत्रलाभं शुभबन्धुपूज्यं क्षितीश्वरान्मानमुपैति विन्द्यात्॥ ५॥
स्वस्थस्य खेटस्य दशाविपाके स्वस्थो नृपादत्र धनादिसौख्यम्।
विद्या-यशः-प्रीति-महत्वमाराद्दारार्थभूम्यादिजधर्ममेति॥ ६॥
मुदान्वितस्यापि दशाविपाके वस्त्रादिभूगन्धसुताथधैर्यम्।
पुराणधर्मश्रवणादिलाभं वस्त्रादियानाम्बरभूषणाप्तिम्॥ ७॥
दशाविपाके सुखधर्ममेति शान्तस्य भू-पुत्रकलत्रयानम्।
विद्याविनोदान्वितधर्मशास्त्रं बह्वर्थदेशाधिपपूज्यताश्च॥ ८॥
स्थानच्युतिर्बन्धुविरोधता च दीनस्य खेटस्य दशाविपाके।
जीवत्यसौ कुत्सितहीनवृत्त्या त्यक्तो जनै रोगनिपीडितैः स्यात्॥ ९॥

दुःखार्दितस्यापि दशाविपाके नानाविधं दुःखमुपैति नित्यम्।
विदेशगो बन्धुजनैर्विहीनश्चौराग्निभूपैर्भयमातनोति ॥१०॥
वकल्यखेटस्य दशाविपाके वैकल्यमायाति मनोविकारम्।
मित्रादिकानां मरणं विशेषात् स्त्रीपुत्रयानाम्बरचौरपीडाम् ॥११॥
दशाविपाके कलहं वियोगं खलस्य खेटस्य पितुर्वियोगम्।
शत्रोर्जनानां धनभूमिनाशमुपैति नित्यं स्वजनैश्च निन्दाम् ॥१२॥
कोपान्वितस्यापि दशाविपाके पापाः समायान्ति बहुप्रकारैः।
विद्याधनस्त्रीसुतबन्धुनाशं पुत्रादिकृच्छ्रं त्वथ नेत्ररोगम् ॥१३॥

[अथ चोक्तं पराशरेण—]

पञ्चमं नवमं चैव विशेषं धनमुच्यते।
चतुर्थं दशमं चैव विशेषं सुखमुच्यते ॥ १ ॥
चन्द्र-भानू विना सर्वे मारका मारकाधिपाः।
षष्ठाष्टमव्ययेशास्तु राहु-केतुस्तथैव च ॥ २ ॥
खरद्रेष्काणपाश्चैव तथा वै नाशकाधिपाः।
विपत्तारा-प्रत्यरीशौ वधभेशस्तथैव च ॥ ३ ॥
आयान्त्यपौ खपश्चैव चन्द्रकान्तगृहाधिपः।
जातके मारकाः प्रोक्ताः कालविद्भिर्मनीषिभिः ॥ ४ ॥
दशा क्षिप्तेषु कालेषु मारको मारकप्रदः।
अन्यस्मिन् योगके प्रीतिः कालविद्भिर्निरूपितम् ॥ ५ ॥

[अन्यच्च—]

राहोर्भवेज्जन्मान केन्द्रवर्ती क्रूरग्रहैश्चापि निरीक्ष्यमाणः ।
भवन्ति वर्षैर्दशभिर्विनाशं वदन्ति वा षोडशभिश्च केश्चित् ॥ १ ॥

स्पष्टार्थः ।

दशास्वपि भवेद्योगः प्रायशो योगकारिणाम् ॥ इति बोध्यम् ।

इति जन्मपत्र-व्यवस्था समाप्ता ।

अथ ग्रन्थकारपरिचयः ।

भारद्वाजमुनेः कुले सुविमले भक्त्याऽनुरागी हरे-
रासीच्छ्रीभगवानथोत्तरपदं दासत्रिपाठीयुतम् ।
श्रौतस्मार्त्तसुकर्मराजिततनुर्विप्रः सुतं भावुकं
विद्याऽभ्यासमकारयत्तनमनःकार्यैः कुलख्यातये ॥ १ ॥

ज्यौतिःशास्त्रमहार्णवप्रतरणे दत्तैकचित्तं वपुः
श्रीविष्णोः पदसेवनैकफलभूत् तं सुतं तादृशम् ।
नाम्ना भूषितवान् वदन्ति सुजनाः श्रीमद्भवानीयुतं
श्रीश्रीशङ्करवत्पदोत्तरलसत्सम्यक्त्रिपाठीपदम् ॥ २ ॥

तस्याप्यस्मि सुतः सुतातचरणाम्भोजं शरण्यं मतं
यस्य श्रीगुरुपादपद्ममकरन्दानन्दभृङ्गं मनः ।
बद्रीनाथपदेन नाम कलितं लोकैः सदा श्रूयते
तत्सद्भ्यः परिशीलयन्नुपहरे पत्रव्यवस्थामिमाम् ॥ ३ ॥

॥ श्रीः ॥

जन्मपत्रव्यवस्था

भाषाटीकासहिता

रचयिता—

पं० श्रीबद्रीनारायणत्रिपाठी

ज्यौ० आ०

★

प्रकाशक :—

मास्टर संस्कृत प्रकाशन भवनम्

सी० के० १५।५२ सुँड़िया

वाराणसी-१